ISBN: 978-93-5636-416-5

विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल

बृजलाल पटेल

कल्पना चौरसिया

विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल

डीन—शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

(उत्तर प्रदेश)

बृजलाल पटेल

बी० एस-सी०, एम०एड०

कल्पना चौरसिया

एम०ए० (इतिहास), बी०एड०

विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल

बृजलाल पटेल

कल्पना चौरसिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

E-book संस्करण: 2022

मूल्य: ₹39

ISBN: 978-93-5636-416-5

प्रकाशक:

कल्पना चौरसिया

मलकपुरा महोबा मकान नं. 105 वार्ड नं. 25

जिला महोबा (उ०प्र०) पिन कोड 210427

Mob.— +916392908087

ई-मेल: kalpanachaurasia1989@gmail.com

प्राक्कथन

आधुनिक परिस्थितियों में विश्व औद्योगीकरण, मशीनीकरण, आतंकवाद, हिंसा, घृणा व द्वेषभाव से ग्रसित है। इसमें वर्गप्रभुता, वर्गभेद व वर्गशोषण विद्यमान है। आज युद्ध व विनाश की आशंका प्रतिक्षण हमें विचलित कर रही है। अन्तर्राष्ट्रीय घृणा व देश की आंधी में नैतिक मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं। अतः ऐसी परिस्थिति में हमें ऐसे नैतिक मूल्यों का संरक्षण करना है जो मानव जाति को इस विनाश की आग से बचा सके प्रेम, दया, सहानुभूति, विश्वबन्धुत्व, सत्य, अहिंसा आदि नैतिक मूल्यों की रक्षा करना मानव अधिकार व नैतिक उत्तरदायित्व है।

भारत प्राचीन काल से ही वसुधैव कुटुम्बकम का सार्थक था। हमारी संस्कृति मानवीय एवं जीवन मूल्यों पर आधारित है। जीवों पर दया करो विश्व शांति स्थापित करना। यह सब संस्कृति के मूल आधार थे। भारतीय संस्कृति के मूल संस्कारों से विद्यार्थियों ने महामानव होने की प्रतिष्ठा प्राप्त की और अपनी ज्ञान ज्योति से विश्व को आलोकित किया। शिक्षा प्रणाली ही समाज व राष्ट्र के विकास का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। कर्तव्यनिष्ठ तथा अधिकार सजग नागरिक ही अपने समाज तथा राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले जा सकते हैं। निःसंदेह शिक्षा राष्ट्र निर्माण के महायज्ञ में सर्वाधिक योगदान कर सकती है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है "बाँदा जनपद के विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन"। इस पुस्तक को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में शिक्षा में इतिहास का स्थान, इतिहास शिक्षण की समस्याएँ, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन के चर, परिकल्पनाएँ, अध्ययन का परिसीमांकन, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता का वर्णन है।

द्वितीय अध्याय सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से संबंधित है, जिसके अंतर्गत ऐतिहासिक विरासतों से संबंधित शोध अध्ययन एवं भूरागढ़ दुर्ग से संबंधित समाचार, लेख इत्यादि का वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं महत्वपूर्ण स्थलों के बारे में वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में शोध विधि, अध्ययन समष्टि, निर्धारित लक्षित प्रतिदर्श का चयन, शोध उपकरण, परीक्षण का प्रशासन, परिक्षण का फलांकन एवं सांख्यिकी प्रविधियों के बारे में उल्लेख किया गया है।

पंचम अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वाचन किया गया है, जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों में भूरा गढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति शजागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण एवं विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

षष्ठ अध्याय में शोध से संबंधित निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ, अध्ययन के सुझाव एवं भावी शोध के निमित्त सुझाव का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित हैं। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है; जब तक की वह जनसामान्य के लिए सुलभ ना हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यार्थियों में भूरा गढ़ दुर्ग के प्रति रुचि जागृत करने में सहायक सिद्ध होगी इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक हैं। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनांक —03/08/2022
स्थान— अतर्रा

राजीव अग्रवाल
बृजलाल पटेल
कल्पना चौरसिया

विषय-सूची

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

तालिका सूची

आरेख सूची

प्रथम अध्याय- अध्ययन परिचय **1–27**

1.1 प्रस्तावना

1.1.1 शिक्षा विकास की प्रक्रिया

1.1.2 इतिहास का आशय, वर्गीकरण एवं महत्त्व

1.1.2.1 शैक्षिक महत्त्व

1.1.2.2 व्यवसायिक महत्त्व

1.1.2.3 नैतिक महत्त्व

1.1.2.4 अनुशासनात्मक महत्त्व

1.1.2.5 सांस्कृतिक महत्त्व

1.1.2.6 सूचनात्मक महत्त्व

1.1.2.7 राष्ट्रीय महत्त्व

1.1.2.8 अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व

1.1.3 शिक्षा में इतिहास का स्थान

1.1.4 इतिहास शिक्षण की समस्याएँ

1.1.5 बाँदा का इतिहास

1.1.5.1 बाँदा की ऐतिहासिक विरासत

1.1.5.1.1 रनगढ़

1.1.5.1.2 कालिंजर

1.1.5.1.3 भूरागढ़

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

1.3 समस्या कथन

1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.5.1 बाँदा जनपद

1.5.2 विद्यार्थी

1.5.3 भूरागढ़ दुर्ग

1.5.4 ऐतिहासिक विरासत

1.5.5 जागरूकता

1.5.6 अध्ययन

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

1.7 अध्ययन के चर

1.8 परिकल्पनाएँ

1.9 अध्ययन का परिसीमांकन

1.10 अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

द्वितीय अध्याय- सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण 28-34

2.1 प्रस्तावना

2.2 ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित शोध अध्ययन

2.3 भूरागढ़ दुर्ग से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि

2.4 निष्कर्ष

तृतीय अध्याय- भूरागढ़ दुर्ग: एक परिचय 35-45

3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.2 भूरागढ़ दर्ग के महत्वपूर्ण स्थल

3.2.1 बावड़ी

3.3.2 तोप रखने का स्थान

3.3.3 मोती महल

3.3.4 नटबली का मन्दिर

3.3.5 क्रान्तिकारियों की कब्रें

3.3.6 शहीद स्मारक

चतुर्थ अध्याय- शोध अभिकल्प **46-58**

4.1 शोध विधि

4.2 अध्ययन समष्टि

4.2.1 विद्यार्थी समष्टि

4.3 निर्धारित लक्षित प्रतिदर्श का चयन

4.4 न्यादर्श चयन विधि

4.5 लक्षित न्यादर्श का चयन

4.5.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता

4.6 शोध उपकरण

4.6.1 भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण

4.6.2 स्वनिर्मित प्रश्नावली की आवश्यकता

4.6.3 प्रश्नावली निर्माण के सोपान

4.7 परीक्षण का प्रशासन

4.8 परीक्षण का फलांकन

4.8.1 जागरूकता परिक्षण का फलांकन

4.9 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

4.9.1 वर्णनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियाँ

4.9.2 अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्रविधियाँ

पंचम अध्याय- प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन **59-81**

5.1 विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

5.2 विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

षष्ठ अध्याय- निष्कर्ष एवं सुझाव **82-88**

6.1 शोध अध्ययन के निष्कर्ष

6.2 शोध अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

6.3 अध्ययन के सुझाव

6.4 भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) [redacted]नचित्र **89**

(ii) भुरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली (प्रथम प्रारूप) **90-91**

(iii) भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली (अन्तिम प्रारूप) **92-93**

(iv) भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली सम्बन्धी उत्तर कुंजी **94-95**

चित्र सूची

1.1 रानागढ़ का किला

1.3 भूरागढ़ का किला

3.2.1बावड़ी

3.2.2 तोप रखने का स्थान

3.2.3 मोती महल

3.2.4 नटबली का मन्दिर

3.2.5 क्रान्तिकारियों की कब्रें

3.2.6 शहीद स्मारक

5.1.1 प्रश्न 1 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.2 प्रश्न 2 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.3 प्रश्न 3 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.4 प्रश्न 4 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.5 प्रश्न 5 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.6 प्रश्न 6 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.7 प्रश्न 7 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.8 प्रश्न 8 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.9 प्रश्न 9 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.10 प्रश्न 10 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.11 प्रश्न 11 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.12 प्रश्न 12 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.13 प्रश्न 13 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.14 प्रश्न 14 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.15 प्रश्न 15 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.16 प्रश्न 16 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.17 प्रश्न 17 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

4.3 लक्षित न्यादर्श का आकर तथा उसका विभाजन

5.1.1 प्रश्न 1 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.2 प्रश्न 2 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.3 प्रश्न 3 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.4 प्रश्न 4 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.5 प्रश्न 5 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.6 प्रश्न 6 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.7 प्रश्न 7 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.8 प्रश्न 8 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.9 प्रश्न 9 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.10 प्रश्न 10 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.11 प्रश्न 11 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.12 प्रश्न 12 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.13 प्रश्न 13 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

5.1.14 प्रश्न 14 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

अध्याय प्रथम
अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

किसी भी देश की पहचान उस देश के सांस्कृतिक और पुरातात्विक विकास से होती है| भारत में भी वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक अनेक शहरों, मन्दिरों और स्थलों इत्यादि की खोज की जा चुकी है, जिन्होंने इस देश के महत्व को विश्व स्तर पर कई गुना बढ़ाया है| भारत एक जीवन्त और विविध सांस्कृतिक, विशाल भूगोल और इतिहास से जुड़ा हुआ देश है। देश की ऐतिहासिक उपलब्धियों के सबूत अभी भी दौरा कर रहे वास्तुकला, विरासत स्थलों और परम्पराओं के पूजा और अध्ययन में दिखाई देता है। इन विरासत स्थलों में से कुछ बहुत अधिक वैश्विक और राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करते हैं। हालांकि, इन विरासत स्थलों को शहरीकरण की जोखिम, आर्थिक विकास और अप्रत्याशित परिवर्तन के निहितार्थ का सामना करना पड़ता है। विश्व धरोहर स्थलों, प्राचीन स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों का संरक्षण राष्ट्रीय महत्व का है और पर्यटन के विकास, जो आर्थिक विकास का प्रमुख स्त्रोत में से एक है को बढ़ावा देने में मदद करता है।

भूरागढ़ दुर्ग भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में स्थित एक दुर्ग है| बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विंध्य पर्वत पर स्थित यह दुर्ग विश्व धरोहर स्थल खजुराहो से 120.7 किमी दूर है| वहीं दूसरी ओर रनगढ़, कालिंजर, चित्रकूट आदि के लिए भी विशेष रूप से जाने जाते हैं| भूरागढ़ को भारत के प्रसिद्ध दुर्गों में गिना जाता रहा है|

बाँदा में **भूरागढ़ किला**, जैसे प्राचीन एवं दिव्य स्थल मौजूद हैं। केन नदी के किनारे, 17 वीं शताब्दी में भूरे पत्थरों से बनाए गए भूरगढ़ किले के खण्डहर हैं। स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान यह स्थान महत्वपूर्ण था। इस स्थान पर एक मेला आयोजित किया जाता है, जिसे 'नटबली का मेला' कहा जाता है।

भूरागढ़ किला केन नदी के किनारे स्थित है। किले से सूर्यास्त देखना एक सुन्दर अनुभव है। भूरगढ़ किले का ऐतिहासिक महत्व महाराजा छत्रसाल के पुत्रों बुन्देला शासनकाल और हृदयशाह और जगतराय से सम्बन्धित है। जगतराय के पुत्र कीरत सिंह ने 1746 में भूरागढ़ किले की मरम्मत की थी,अर्जुन सिंह किले के देखभालकर्ता थे।

1787 में नवाब अली बहादुर ने बाँदा डोमेन की देखभाल शुरू की। अली बहादुर प्रथम का युद्ध सन् 1792 के लगभग भूरागढ़ के प्रशासक नोने अर्जुन सिंह से हुआ। जिसके बाद किला कुछ समय तक नवाबों के शासन में रहा। लेकिन राजाराम दउवा और लक्ष्मण दउवा ने इसे नवाबों से फिर से जीत लिया। अर्जुन सिंह की मृत्यु के बाद, नवाब अली बहादुर ने भूरगढ़ किले पर अधिकार कर लिया। 1802 ई0 में नवाब की मृत्यु हो गई और गौरीहार महाराज ने उसके बाद प्रशासन ले लिया।

ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ महान स्वन्त्रतता संघर्ष 14 जून 1857 को शुरू हुआ था। इसका नेतृत्व बाँदा में नवाब अली बहादुर द्वितीय ने किया था। यह संघर्ष अपेक्षा से अधिक उग्र था और अंग्रेजों से लड़ने में इलाहाबाद, कानपुर और बिहार के क्रान्तिकारी नवाब में शामिल हो गए। 15 जून 1857 को, क्रान्तिकारियों ने ज्वाइंट मजिस्ट्रेट कॉकरेल की हत्या कर दी। 16 अप्रैल 1858 को, व्हिटलुक बाँदा पहुँचे और बाँदा की क्रान्तिकारी सेना के खिलाफ लड़ाई लड़ी। इस युद्ध के दौरान किले में लगभग 3000 क्रान्तिकारी मारे गए थे। नट (जो लोग सरबई से कलाबाजी करते हैं) ने इस युद्ध में अपने प्राणों की आहुति दी। किले के अन्दर उनकी कब्रें पाई जाती हैं। किले के चारों ओर कई क्रान्तिकारियों की कब्रें हैं।

1.1.1 शिक्षा विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है| इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा' का महत्वपूर्ण स्थान है| जब से बालक इस संसार में जन्म लेता

है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारम्भ कर देता है| वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है|

प्रारम्भिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्राय: कम होती है| धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरुप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है| बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है, जिसके परिणामस्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है| शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है|

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है, अपितु उसका चारित्रिक विकास भी करती है| संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है| सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय, समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं| बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं, जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके| बालक की शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है| उच्च माध्यमिक शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है, जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है|

समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित, चिन्तक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देंगे| क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा, शासक-प्रशासक, वैश्य समाज को उत्पादक,

कृषक, शिल्पकार, व्यापारी देते थे| शूद्र वर्ण छोटे-छोटे कार्यो के लिए भृत्यों या नौकरी की आपूर्ति करते थे| इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिन्तन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया| सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति क्षमता व आन्तरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गई| वर्णों के आधार पर तदनुरूपी चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए जो उस समय की दार्शनिक सोच के द्योतक हैं-ब्राह्मण-मोक्ष, क्षत्रिय-काम, वैश्य-अर्थ, शूद्र-धर्म| कालान्तर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ| जो आज के सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हो, शिक्षा में हो, या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है| इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितान्त आवश्यक है जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुँचा सके, और इस सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी युग में एक सकारात्मक सोच का विकास कर सके| वर्तमान समय में उच्च माध्यमिक शिक्षा की जो स्थिति है उसमें कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योंकि उच्च माध्यमिक शिक्षा के सन्दर्भ में भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है|

1.1.2 इतिहास का आशय, वर्गीकरण एवं महत्व

इतिहास मानव जीवन की समस्त क्रियाओं पर प्रकाश डालने वाला एक कथ्य या कहानी है जिसमें मानव की समस्त कियाओं तथा उत्थान पतन की झाँकी हमें देखने को मिलती है। इतिहास के द्वारा हम अतीत के उन सारे गुण दोषों को देख पाते हैं जो मानव के द्वारा सम्पादित किये जाते रहे हैं। वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इतिहास विषय का शिक्षण व अध्ययन की महती आवश्यकता है। इस विषय का अर्थ, परिभाषा, अवधारणा, उद्देश्य तथा उपयोगिता अत्यन्त व्यापक एवं दूरगामी है। अतः भविष्य निधि के रूप में इतिहास विषय का अध्ययन व शिक्षण की

व्यवस्था आवश्यक है। अतः समस्त मानव जाति को इतिहास विषय के अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए तथा इसकी सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

इतिहास मानव जीवन की समस्त क्रियाओं पर प्रकाश डालने वाला एक कथ्य या कहानी है जिसमें मानव जीवन की समस्त क्रियाओं तथा उत्थान पतन की झाँकी हमें देखने को मिलती है। इसमें समस्त कृत्यों को क्रमवार ढंग से निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता है। इतिहास नामक शिक्षा शाखा की उत्पति सर्वप्रथम यूनान में मिलती है। परीक्षा सिद्ध गवेशणा के अर्थ में स्वयं इतिहास शब्द का प्रयोग उस समय हुआ जब किसी विशेषज्ञ के द्वारा वाद विवाद के निबटारे के लिए अभ्यर्थना की जाती थी। अतः इतिहासकार से अभिप्राय वाद-विवाद के निर्णय करने वाले व्यक्ति से था। सर्वप्रथम हिस्ट्री शब्द का प्रयोग करने वाला इतिहास का जनक हेरोडोटस था। इस प्रकार यह सर्वमान्य है कि हिस्ट्री अथवा इतिहास का उद्गम स्थल प्राच्च संस्कृति का केन्द्र यूनान रहा है। वैसे विद्वानों और इतिहासकारों ने इतिहास शब्द का प्रयोग संकीर्ण तथा व्यापक दोनों अर्थों में किया हैं। सबसे पहले हम इसके शाब्दिक अर्थ पर प्रकाश डालना चाहेंगे तदुपरांत इसके संकीर्ण और व्यापक अर्थों का विवेचन करेंगे।

इतिहास विषय की आवश्यकता पर बल देते हुऐ इतिहासकार रोमिला थापर का मानना है की मानवीय एवं राष्ट्रीय विरासत को समझने के लिये बालकों को इतिहास का ज्ञान देना अत्यावश्यक है। इतिहास विषय के अध्ययन से बालकों में स्थानीय राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ज्ञान से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त होता है जिससे वे अपने देश के स्थानीय स्तर के इतिहास को जानते हुए राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर के इतिहास को समझ पाते है। 19 वीं शताब्दी के अन्तिम चरण तथा 20 वीं सदी के प्रारम्भ में जब विज्ञान का बोलबाला हो गया थाए तब इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा जाने लगा था। केवल इतिहासकारों ने ही नहीं ए वान राजनीति शास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने भी इसे विज्ञानों के विज्ञान का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया था। फिर भी इतिहास की प्रकृति के सम्बन्ध में विवाद बना रहा। कुछ विद्वानों ने इतिहास को कारण तथा कार्यकारण भाव का सूचक माना। इसके विपरीत दूसरे विद्वानों ने इतिहास की समाज के सच्चे विधान या विज्ञानों के विज्ञान के रूप में देखा। आज कोई भी इस बात से सहमत नहीं होता है कि इतिहास अलौकिक शक्तियों के हस्तक्षेप से प्रभावित होता है।

अब सामान्यतः यह विश्वास किया जाने लगा है कि इतिहास को उन्हीं विधियों का अनुसरण करके समझा जा सकता है ए जिनका अनुसरण भौतिक और सामाजिक वैज्ञानिक करते हैं। इसी कारण आज इतिहास को उस अध्ययन क्षेत्र के रूप में देखा जाता है जो वास्तविकता का वर्णन करता है। इस अध्ययन क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके ही वास्तविकता की खोज की जाती है।

इतिहास को सार्वभौमिक रूप से विद्यालय पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण विषय माना गया है। यह समाज में मनुष्य के विकास का अध्ययन है। इतिहास के अध्ययन के अभाव में न तो हम अपने वर्तमान को समझ सकते हैं और न भविष्य का आंकलन कर सकते हैं। इसी कारण पाठ्यक्रम में इतिहास को स्थान प्रदान किया गया है। इतिहास के शिक्षण से विद्यार्थियों में अपने देश के अतीत के प्रति प्रेम एवं गौरव की भावना उत्पन्न होती है एवं इसके ज्ञान से जाति ए धर्म ए भाषा आदि के बन्धनों को समाप्त कर भावनात्मक एकता का विकास किया जा सकता है। इतिहास के द्वारा छात्रों को ज्ञान का भण्डार प्रदान किया जाता है, अर्थात् इतिहास स्वयं ज्ञान भण्डार है, जिसमें बालक का स्वेच्छानुसार अन्वेषण कर सकते हैं। इतिहास उनको विभिन्न राष्ट्रों, व्यक्तियों, उनके विचारों, परम्पराओं, प्रथाओं तथा समस्याओं का ज्ञान प्रदान करता है। इतिहास में बालक को अपने मस्तिष्क का सबसे अधिक उपयोग करना पड़ता है, उनको स्मरण रखने के लिए स्मरण शक्ति का उपभोग करना पड़ता है। जब बालक इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृतियों संस्थाओं आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त करता है ए तब उसकी कल्पना शक्ति को विकसित होने के बहुत मे अवसर प्राप्त होते हैं। इन सबमें प्रमुख लाभ इतिहास के अध्ययन से यह होता है कि बालक निष्पक्षता एवं अपनी योग्यता के अनुसार तथ्यों को संकलित ए परीक्षित एवं समन्वित करना सीख जाता है। इतिहास बालक के मानसिक अन्तरिक्ष को विस्तृत करता है ए जिससे वह समस्त वसुधा को कुटुम्ब समझने के लिए उद्यत हो जाता है। वह समस्त विश्व को ऐक्य के दृष्टिकोण से देखता है। इस प्रकार इससे आसमें सत्य, देश, प्रेम के साथ-साथ विश्वबन्धुत्व की भावना भी विकसित हो जाती है।

इतिहास का प्रमुख कार्य यह स्पष्ट करता है कि मानव तथा समाज का विकास किस प्रकार हुआ। उसका यह कार्य नहीं है कि वह राजाओं, रानियों, युद्धा, सन्धियों तथा तिथियों के विषय में ही विवरण प्रस्तुत करे, इतिहास अतीत के वर्णन द्वारा वर्तमान का स्पष्टीकरण करता है। वर्तमान की

विशद रीति से सहृदयतापूर्वक व्याख्या करना ही इतिहास का महान उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण माँग है जिसे किसी के द्वारा अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। भावात्मक एकता के लिए इतिहास का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है जिसके महत्व को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है

1.1.2.1 शैक्षिक महत्व

शैक्षिक दृष्टि से इतिहास का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इतिहास भावी शिक्षा का आधार है। इतिहास मानव जीवन को परिष्कृत ए पुष्पित तथा पल्लवित करती है। यह मनुष्य को परिपक्व बुद्धिमान तथा अनुभवी बनाने वाला एक उपयोगी विषय है। अतीत के आधारशिला पर वर्तमान का निर्माण करने तथा भावी मार्गदर्शन के लिए इतिहास मनुष्य को सक्षम बनाता है। हीगेल ने लिखा है कि दृष मनुष्य इतिहास से वह शिक्षा प्राप्त करता है, जो अन्यों में अप्राप्त है।

1.1.2.2 व्यावसायिक महत्व

व्यावसायिक दृष्टि से भी इतिहास का कम महत्व नहीं है। इतिहास का ज्ञान प्र करने वाले व्यक्ति पुस्तकालयों, संग्रहालयों तथा अन्य संस्थाओं सुअवसर प्राप्त कर सकते हैं। पत्रकारिता के लिए तो इतिहास का ज्ञान न प्रशासकीय सेवा में भी इतिहास का ज्ञान सहायता कराता है क्योंकि इसके ज्ञान के माध्यम से प्रशासक मानवीय एवं सामाजिक समस्याओं को समझने एवं उनके समाधान में समर्थ होता है।

1.1.2.3 नैतिक महत्व

इतिहास का नैतिक दृष्टि से भी महत्व है क्योंकि वह नैतिकता की शिक्षा प्रदान करता है। यह समाज के नैतिक मूल्यों को भी संरक्षित रखता है। विश्व के तमाम महापुरुषों की जीवनी को यह मानव समुदाय के समक्ष परीक उसकी नैतिकता का पाठ हमें पढ़ाता है। इसके अतिरिक्त इतिहास

अध्ययन के माध्यम से छात्र विश्व के महान व्यक्तियों के जीवन दर्शन से परिचित होता है तथा उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। इससे छात्रों व पाठक के व्यक्तित्व में नैतिक गुणों का विकास होता है।

1.1.2.4 अनुशासनात्मक महत्व

इतिहास विषय का अनुशासनात्मक महत्व भी कम नहीं है क्योंकि इतिहास अध्ययन द्वारा छात्रों की मानसिक शक्तियां प्रशिक्षित होती है। अन्य विषयों की तुलना में इतिहास अध्ययन में छात्रों को स्मरण एवं कल्पना के लिए अधिक अवसर प्राप्त होते है। जब छात्र इतिहास अध्ययन में किसी ऐतिहासिक घटना के कारण एवं परिणाम का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं तो वे तथ्यों का परीक्षण एवं विवेचन करके साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हैं। इतिहास पुरुषों की जीवनी से छात्र अनुशासन ए समय की उपयोगिता आचरण आदि की बातों को सीखाता है।

1.1.2.5 सांस्कृतिक महत्व

सांस्कृतिक दृष्टि से भी इतिहास का व्यापक महत्व है क्योंकि यह मानव मस्तिष्क एवं आचरण को सुसंस्कृत बनाने का प्रमुख एवं प्रभावपूर्ण साधन है। इसके अध्ययन से छात्र अपने देश की अतीत कालीन सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर वर्तमान संस्कृति को समझने में समर्थ होते हैं और उसके क्रमिक विकास का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इतिहास द्वारा विद्यमान तथ्यों की अभिव्यक्ति ए अपनी रीति रिवाज ए अपनी प्रथाओं ए अपनी परम्पराओं आदि का ज्ञान कराया जाता है। प्राचीन सभ्यता संस्कृति के अनुसार जो हमें आज वर्तमान संस्कृति प्राप्त हुई है ए इसका श्रेय इतिहास को ही जाता है।

1.1.2.6 सूचनात्मक महत्व

इतिहास का सूचनात्मक महत्व भी अधिक है। यह एक तरफ से सूचनाओं का विशाल और अद्भुत भण्डार है। छात्र इसके अध्ययन द्वारा विविध मानवीय समस्याओं के समाधन खोज सकते हैं। इसके वास्तविक अध्ययन से अवबोध के नये आयाम जोडे जा सकते है। अतीत कालीन अनुभवों के अध्ययन से व्यक्तियों में विद्वेश संकीर्णता दूर करने में सहायता मिलती है।

1.1.2.7 राष्ट्रीय महत्व

इतिहास राष्ट्रीय महत्व का विषय है क्योंकि छात्र जब अपने देश के ऐतिहासिक दुर्गों ए खण्डहरों ए भवनों ए राज प्रसादों ए मीनारों गुफाओं ए स्पूतों ए स्तम्भों ए शिलालेखों आदि के विषय में पढ़कर ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करता है तो राष्ट्रीय स्तर के महत्व से वह परिचित होता है। आज ताजमहल विश्व के अजूबों में सर्वप्रथम है। इस जानकारी से छात्रों में राष्ट्रीय महत्व के प्रति जागृति पैदा होती है। इसके साथ ही इतिहास अध्ययन द्वारा देश की गौरवशाली गाधाओं से वह परिचित होता है। एक तरह से इतिहास छात्रों में देशप्रेम की भावना जागृत करने का काम करता है। यह राष्ट्रीय गौरव को प्रदान कर अच्छे नागरिक बनाने का प्रयत्न करता है। इतिहास अध्ययन से छात्र देश के महापुरुषों के शौर्य ए त्याग ए बलिदान एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यों का अध्ययन कर प्रेरणा प्राप्त करता है।

1.1.2.8 अंतर्राष्ट्रीय महत्व

इतिहास का अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना की दृष्टि से भी विशेष महत्व है क्योंकि विष्व इतिहास के ज्ञान द्वारा ही छात्रों को विभिन्न देशों की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान कराया जा सकता है। इसके साथ ही इतिहास अध्ययन द्वारा विभिन्न राष्ट्रों के संबंधों प्रभावों एवं उनकी सामाजिक ए सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को समझने की क्षमता उत्पन्न की जा सकती है परिणामस्वरूप इससे छात्रों में विश्व बंधुत्व की भावना विकसित होगी जो अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं महत्व के लिए आधार बनेगी।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि विभिन्न क्षेत्रों में इतिहास का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। इतिहास के ज्ञान के बिना विश्व की विविध समस्याओं का ज्ञान और उसका समाधान संभव नहीं है। अतः सभी को इतिहास का ज्ञान आवश्य प्राप्त करना चाहिए।

1.1.3 शिक्षा में इतिहास का स्थान

इतिहास लेख या इतिहास शास्त्र (Historiography) से दो चीजों का बोध होता है, (1) इतिहास के विकास एवं क्रियापद्धति का अध्यन तथा (2) किसी विषय के इतिहास से एक सामग्री इतिहासकार इतिहासशास का अध्ययन विषयवार करते हैं, जैसे भारत का इतिहास जापानी साम्राज्य का इतिहास आदि

इतिहास के मुख्य आधार युगविशेष और घटनास्थल के वे अवशेष हैं जो किसी न किसी रूप में प्राप्त होते हैं। जीवन की बहुमुखी व्यापकता के कारण स्वल्प सामग्री के सहार विगत बुम समाजका निर्माण करना दुसाध्य है। सामग्री जितनी ही अधिक होती जाती है उसी अनुपात से बीते युग तथा समाज की रूपरेखा प्रस्तुत करना साध्य होता जाता है। पर्याप्त साधनों के होते हुए भी यह नहीं कहा जा सकता कि कल्पनामिश्रित चित्र निश्चित रूप से शुद्ध या सत्य ही इसलिए उपयुक्त कमी का ध्यान रखकर कुछ विद्वान् कहते हैं कि इतिहास की संपूर्णता असाध्य सी है, फिर भी यदि हमारा अनुभव और ज्ञान प्रचुर हो, ऐतिहासिक सामग्री की जाँच पड़ताल को हमारी कला तर्कप्रतिष्ठत हो तथा कल्पना संयत और विकसित हो तो अतीत का हमारा चित्र अधिक मानवीय और प्रामाणिक हो सकता है। सारांश यह है कि इतिहास की रचना में पर्याप्त सामग्री, वैज्ञानिक ढंग से उसकी जाँच, उससे प्राप्त ज्ञान का महत्व समझने के विवेक के साथ ही साथ ऐतिहासक कल्पना की शक्ति तथा सजीव चित्रण की क्षमता की आवश्यकता है। स्मरण रखना चाहिए कि इतिहास न तो साधारण परिभाषा के अनुसार विज्ञान है और न केवल काल्पनिक दर्शन अथवा साहित्यिक रचना है। इन सबके यथोचित समिश्रण से इतिहास का स्वरूप रचा जाता है।

इतिहास न्यूनाधिक उसी प्रकार का सत्य है जैसा विज्ञान और दर्शनों का होता है। जिस -प्रकार विज्ञान और दर्शनों में हेरफेर होते हैं उसी प्रकार इतिहास के चित्रण में भी होते रहते हैं। मनुष्य के बढ़ते हुए ज्ञान और साधनों की सहायता से इतिहास के चित्रों का संस्कार, उनकी पुरावृत्ति और संस्कृति होती रहती है। प्रत्येक युग अपने-अपने प्रश्न उठाता है और इतिहास से

1.1.4 इतिहास शिक्षण की समस्याएँ

इतिहास का डरावना ज्ञान

एक सामान्य इतिहास शिक्षक आमतौर पर अपने विषय में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखता है और वह इतिहास के अपने ज्ञान के पूरक के लिए बहुत उत्साही नहीं है जो उसने स्कूल कॉलेज की उम्र में हासिल किया है। उसे न तो पढ़ने में दिलचस्पी है और न ही सैर-सपाटे में वह खुद को वैज्ञानिक तरीके से प्रशिक्षित करने के लिए इच्छुक नहीं है। आम तौर पर ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में उनकी गलत धारणाएं हैं और इससे विनाशकारी स्थिति पैदा होती है। इस तरह के शिक्षक से विद्यार्थियों को विकृत तथ्य प्रस्तुत करने की संभावना होती है और इस प्रकार उनके व्यक्तित्व को विकृत किया जाता है।

विश्व इतिहास का ज्ञान खो देता है:

आमतौर पर हमारे स्कूलों में इतिहास के शिक्षकों को विश्व इतिहास के ज्ञान की कमी पाई जाती है। ज्ञान की इस कमी के कारण वे ऐतिहासिक तथ्यों को उनके वास्तविक प्रभाव में देखने में विफल होते हैं। दुनिया के किसी भी हिस्से में हर सामाजिक या राजनीतिक आंदोलन का प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ता है, इसलिए किसी के लिए भी अपने देश के इतिहास से काफी हद तक निपटना संभव नहीं है। इस प्रकार विश्व इतिहास का ज्ञान किसी भी सफल इतिहास शिक्षक के लिए जरूरी है, इसके बिना उसका शिक्षण अपूर्ण रहेगा।

धार्मिक या सामाजिक पूर्वाग्रहः

अधिकांश शिक्षक ऐसे पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं और इससे पीड़ित कोई भी व्यक्ति इतिहासका सही ज्ञान नहीं दे सकता है। यदि कोई हिंदू शिक्षक कट्टर है और नस्लीय पूर्वाग्रह है तो वह मुसलमानों के इतिहास को सही और निष्पक्ष रूप से नहीं सिखा सकता है। वह निश्चित रूप से शिक्षण में बेईमान होंगे क्योंकि उनके लिए यह समझाना काफी मुश्किल होगा कि मुसलमान कैसे हिंदू शासकों पर विचार करते हैं। अन्य धर्मों के शिक्षक के लिए भी ऐसी ही स्थिति होगी।

राष्ट्रीय पूर्वाग्रहः

इतिहास के शिक्षण में राष्ट्रीय पूर्वाग्रह उतना ही हानिकारक है जितना कि धार्मिक या नस्लीय पूर्वाग्रहा "मेरा देश, सही या गलत" एक निंदा का नारा है। देशभक्ति के महान गुण है और एक देशभक्ति होनी चाहिए लेकिन देशभक्ति और राष्ट्रीय पूर्वाग्रह के अलग-अलग अर्थ हैं। एक सच्चा देशभक्त अपने देश की कमजोरियों को देखता है और स्वीकार करता है जबकि राष्ट्रीय पूर्वाग्रह रखने वाला व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। राष्ट्रीय पूर्वाग्रह से पीड़ित इतिहास का एक शिक्षक अपने बच्चों को उनके देश की कमजोरियों के बारे में कभी नहीं समझाएगा।

यदि भारत में एक इतिहास के शिक्षक के पास राष्ट्रीय पूर्वाग्रह है, तो वह बच्चों के सामने यह नहीं समझाएगा कि अंग्रेज अपने देश की कमजोरियों के कारण इस देश में अपना शासन करने में सक्षम थे। दूसरी ओर, वह छात्रों को बताएगा कि भारतीय शासकों में कोई कमजोरियां नहीं थीं और यह केवल अंग्रेजों की चालाक थी कि वे भारतीयों पर हावी थे। एक इतिहास शिक्षक को देशभक्त होना चाहिए लेकिन उसे कभी राष्ट्रीय पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए, उसे अपने और अपने लोगों में अंतर्राष्ट्रीय समझ विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

शिक्षण की दोषपूर्ण विधि:

हमारे देश में आम तौर पर इतिहास को मृत राजकुमारों और बौगोन घटनाओं से निपटने के लिए माना जाता है और इस तरह की शिक्षा निर्जीव हो जाएली हालांकि, इतिहास एक जीवित विषय है क्योंकि यह the मानव के नाटक या दुनिया के मंच से संबंधित है जो अभी भी बढ़ रहा है। इस नाटक को बच्चों के सामने कक्षा-कक्ष में विशद रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इसके लिए एक इतिहास शिक्षक को सक्रिय और जीवन से भरा होना चाहिए

सहसम्बन्ध की कमी:

इतिहास पढ़ाने वाले अधिकांश शिक्षक अन्य विषयों के साथ इतिहास को सहसंबंधित करने में विफल होते हैं। चूँकि किसी भी विषय को अलगाव में नहीं पढ़ाया जा सकता है, इसलिए इतिहास को कभी भी इस तरह से नहीं पढ़ाया जाना चाहिए। इतिहास के शिक्षक के लिए भूगोल नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र या शिल्प या किसी अन्य विषय के साथ सहसंबंध बनाना हमेशा संभव है।

1.1.5 बाँदा का इतिहास

यह शहर बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित है। इस शहर का नाम महर्षि वामदेव के नाम पर है। बाँदा महर्षि वामदेव की तपोभूमि है। यह शहर केन नदी के किनारे स्थित है। बाँदा एक ऐतिहासिक शहर है। ये शहर बाँदा जिले का मुख्यालय भी है। बाँदा के चारों तरफ अनेक पर्यटन स्थल हैं। चित्रकूट यहाँ से करीब 60 किमी., कालिंजर करीब 60 किमी. है। बाँदा केन नदी-तल से प्राप्त गोमेद रत्नों के लिए प्रसिद्ध है, जिनका निर्यात किया जाता है। यहाँ विभिन्न मस्जिदें ओर हिन्दू मन्दिर हैं। यहाँ की केन नदी भारत की एक प्रमुख नदी है। केन नदी में शजर पत्थर पाया जाता है जिसमें प्राकृतिक रूप से प्राकृतिक दृश्य बने रहते हैं, ये कुदरत का

बेहतरीन करिश्मा है। यहाँ के प्रमुख मन्दिरों में माँ महेश्वरी देवी का सात खण्ड का मन्दिर, संकट मोचन मन्दिर, माँ काली देवी मन्दिर आदि प्रमुख हैं, वामदेवेश्वर मन्दिर आदि प्रमुख हैं। विश्व विख्यात मदरसा जामिया अरबिया हथौरा यहाँ के हथौरा गाँव में है, जो बाँदा शहर से 16 किमी० दूरी पर है तथा बाँदा शहर की नवाबी जामा मस्जिद भी खासा प्रसिध्द है जो कि वर्तमान में पुरातत्व विभाग के अधिकार में है| बाँदा बुन्देलखण्ड का प्रमुख शहर है। भूरागढ़ बाँदा जिले का ही एक कस्बा है। जो बाँदा शहर से करीब 3 किमी दूर है। देश विदेश से लोग भूरागढ़ दुर्ग घूमने जाते हैं| बाँदा जिला भगवान नीलकण्ठ एवं देवर्षि बामदेव की स्मृतियों से जुड़ा धार्मिक जिला है। यह अनेक महापुरुषों की जन्म स्थली एवं कर्म भूमि रही है। बाँदा एक ऐतिहासिक नगर है। जिसका वर्णन प्रचीन ग्रन्थों में भी मिलता है।

1.1.5.1 बाँदा की ऐतिहासिक विरासत

यह शहर बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित है। इस शहर का नाम महर्षि वामदेव के नाम पर है। बाँदा महर्षि वामदेव की तपोभूमि है। यह शहर केन नदी के के किनारे स्थित है। बाँदा एक ऐतिहासिक शहर है। ये शहर बाँदा जिले का मुख्यालय भी है। बाँदा के चारो तरफ अनेक पर्यटन स्थल हैं। चित्रकूट यहाँ से करीब 60 किमी, कालिंजर करीब 60 किमी है। बाँदा केन नदी-तल से प्राप्त गोमेद रत्नों के लिए प्रसिद्ध है, जिनका निर्यात किया जाता है। यहाँ विभिन्न मस्जिदें और हिन्दू मन्दिर हैं। यहाँ की केन नदी भारत की एक प्रमुख नदी है। केन नदी में शजर पत्थर पाया जाता है जिसमें प्राकृतिक रूप से प्राकृतिक दृश्य बने रहते हैं, ये कुदरत का बेहतरीन करिश्मा है। यहाँ के प्रमुख मन्दिरों में माँ महेश्वरी देवी का सात खण्ड का मन्दिर, संकट मोचन मन्दिर, माँ काली देवी मन्दिर आदि प्रमुख हैं, वामदेवेश्वर मन्दिर आदि प्रमुख हैं। विश्व विख्यात मदरसा

जामिया अरबिया हथौरा यहाँ के हथौरा गाँव में है जो बाँदा शहर से 16 किमी० दूरी पर है तथा बाँदा शहर की नवाबी जामा मस्जिद भी खासा प्रसिद्ध है जो कि वर्तमान में पुरातत्व विभाग के अधिकार में है| बाँदा बुन्देलखण्ड का प्रमुख शहर है। भूरागढ़ बाँदा जिले का ही एक कस्बा है। जो बाँदा शहर से करीब 3 किमी दूर है। देश-विदेश से लोग भूरागढ़ दुर्ग घूमने जाते हैं| बाँदा जिला भगवान नीलकण्ठ एवं देवर्षि बामदेव की स्मृतियों से जुड़ा धार्मिक जिला है। यह अनेक महापुरुषों की जन्म स्थली एवं कर्म भूमि रही है। बाँदा एक ऐतिहासिक नगर है, जिसका वर्णन प्रचीन ग्रन्थों में भी मिलता है।

क्षेत्रफल-बाँदा जनपद से चित्रकूट अलग जिला बन जाने के कारण अब बाँदा जनपद का क्षेत्रफल 4112 वर्ग किलोमीटर रह गया है। बाँदा से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित बुन्देलखण्ड की शान कहे जाने वाला 'भूरागढ़ किला है। केन नदी के पास खड़ा यह भूरागढ़ का किला बुन्देली राजाओं की निशानी है। यह किला सत्रह सौ छियालीस सदी का है। इस किले का इतिहास इसे बलिदान, देशभक्ति और समानता का प्रतीक मानता है।

सीमाएँ-बाँदा जनपद के उत्तर में फतेहपुर दक्षिण में छतरपुर, पन्ना, सतना (म.प्र.) स्थित है। पूरब में जिला-चित्रकूट धाम एवं रीवाँ, मध्यप्रदेश स्थित है। पश्चिम में महोबा, हमीरपुर जिला इसकी राजनैतिक सीमा निर्धारित करते हैं।

विस्तार-विस्तार की दृष्टि से बाँदा जनपद उत्तर से दक्षिण 108 किलोमीटर चौड़ा है। यह पूरब में भरतकूप पश्चिम में मटौंध उत्तर में चन्दवारा यमुना नदी तथा दक्षिण में कलिंजर तक फैला है। इसका क्षेत्रफल लगभग 4112 वर्ग किलोमीटर है।

प्राकृतिक रचना-बाँदा को प्राकृतिक बनावट के अनुसार दो भागों में बाँट सकते हैं।

1.केन के पास का पश्चिमी भाग

2.मध्य का समतल मैदान।

1.केन के पास का पश्चिमी भाग-केन नदी के आसपास तथा पश्चिम की ओर कालीमार भूमि पायी जाती है। यह मिट्टी फसल उपज के लिए श्रेष्ठ मानी जाती है।इस भाग में अधिकतर बाँदा तहसील का हिस्सा आता है।

2.मध्य का समतल मैदान-इस भाग में बबेरू, अतर्रा व नरैनी तहसीले आती हैं। यहाँ का अधिकतर भाग समतल है। केवल छोटी नदियों व नालों के किनारे ही ऊँचा-नीचा है। समतल होने के कारण नहरों से सिंचाई होती है। इस क्षेत्र में अधिकतर काबर व मार मिट्टी पायी जाती है। इस क्षेत्र में धान की फसल अधिक होती है। बाँदा जनपद की मिट्टी-हमारे जनपद में तीन प्रकार की मिट्टी पायी जाती है-

1.मार

2.काबर

3.पडुवा (राकड)।

वनस्पतियाँ- जनपद में पर्णपाती वन झाड़-झांखड़, कटीली झाड़ियाँ घास प्रमुख रूप से पायी जाती है।

पर्वत- बाँदा जनपद में प्रमुख रूप से बाम्बेश्वर,खत्री पहाड़,रामचन्द्र, सिंघल्ला, भूरागढ़ व रसिन पर्वत पाये जाते हैं।

नदियाँ- बाँदा जनपद में प्रमुख रूप से केन नदी, यमुना नदी, बागै नदी, चन्द्रावलि नदी, गड़रा नदी ये प्रमुख नदियाँ हैं|

1.1.5.1.1 रनगढ़ का किला

बुन्देलखण्ड में उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में बँटी केन नदी की बीच जलधारा में बने अट्ठारहवीं सदी के देश में एक मात्र जलीय दुर्ग 'रनगढ़ किले' के प्रति खनन माफियाओं की नजरें

ठीक नहीं हैं, पिछले साल हुए बालू खनन से चट्टाने खुल गईं हैं और दीवारें दरकने लगी हैं। कानूनी शिकंजा न कसा गया तो यह दुर्लभ किला कभी भी जमींदोज हो सकता है। आमतौर पर रजवाड़ों के किले पहाड़ों पर ही बने हैं, लेकिन बुन्देलखण्ड के बाँदा में गौर-शिवपुर गाँव के पास अट्ठारहवीं सदी का एक किला 'रनगढ़' उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में बँटी केन नदी की बीच जलधारा में अब भी मौजूद है जो अपने आप में किसी अजूबा से कम नहीं है। इस किले के निर्माण से सम्बन्धित कोई अभिलेखीय साक्ष्य तो नहीं मिलते, पर इतिहासकार राधाकृष्ण बुन्देला बताते हैं कि अट्ठारहवीं सदी में चरखारी नरेश ने रिसौरा रियासत की रखवाली के लिए सैनिक सुरक्षा चौकी के रूप में इसका निर्माण कराया था, जो बाद में पन्ना नरेश महाराजा छत्रसाल के आधिपत्य में हो गया था। करीब चार एकड़ के क्षेत्रफल में यह दुर्लभ किला केन नदी के बीच चट्टानों पर काफी ऊँचाई पर बना है। तीन साल पूर्व इसी किले के पास की जलधारा से अष्टधातु की एक भारी भरकम तोप बरामद हुई थी, जिसे मध्य प्रदेश शासन की गौरिहार पुलिस अपने क्षेत्र की जलधारा में होने का दावा जता कर उठा ले गई, जो अब खजुराहो में रखी है। बाँदा के गौर-शिवपुर गाँव का वशिंदा सिद्दीक खाँ बताता है कि 'कई साल पहले पनगरा गाँव के दबंग किले का मुख्य दरवाजा उखाड़ कर ले गए, जो सराय नामक हवेली में लगा है।' उसने बताया कि 'अब तक यह किला अपनी मजबूती के बल पर टिका रहा, पिछले साल कुछ खनन माफियायों ने किले के चारों ओर की बालू पोकलैण्ड मशीन के जरिए खुदाई कर बेंच ली। परिणामस्वरूप चट्टानें खुल गईं और दीवारों का दरकना शुरू हो गया है।' किले के अन्दर कई तहखाने हैं| किले के अन्दर कई तहखानें व एक भारी कुआँ के अलावा भगवान शिव का मन्दिर भी बना है, जिससे साबित होता है कि इस राज्य का राजा शिव भक्त रहा होगा। किले को चोरों ने भी नहीं बक्शा, धन के लालच में कई जगह सब्बल और कुदाल से खुदाई किए जाने के निशान मौजूद हैं। स्थानीय पत्रकार नरेन्द्र तिवारी बताते हैं कि 'तोप मिलने के

बाद बाँदा प्रशासन हरकत में आया था और तत्कालीन आयुक्त पूरे सरकारी अमले के साथ पिकनिक मनाने के तौर पर आमद दर्ज कराई थी। तब लगा था कि किले का संरक्षण व उद्धार होगा, लेकिन केवल सीढ़ियों के निर्माण के अलावा कुछ नहीं हुआ।' पनगरा गाँव के बलराम दीक्षित बताते हैं कि 'चरखारी रियासत से रानी नाराज होकर रिसौरा रियासत आ गई थीं, और इस किले में काफी दिन गुजारा था, तभी किले का नाम 'रानीगढ़' हुआ और अब रानीगढ़ का अपभ्रंश में 'रनगढ़' हो गया है।'

चित्र संख्या - 1.1 रनगढ़ का किला

बाँदा जनपद के नरैनी पनगना के उपजिलाधिकारी ने बताया कि 'केन की जलधारा बँटी होने से रनगढ़ किले का आधा हिस्सा उत्तर प्रदेश के बाँदा व आधा मध्य प्रदेश के छतरपुर प्रशासन के अधीन है, इसी वजह से रखरखाव में अड़चन पैदा हो रही है। हालांकि यह दुर्लभ किला भारतीय पुरातत्व एवं सर्वेक्षण विभाग के दस्तावेजों में दर्ज है।' बाँदा के भूतत्व एवं खनिज अधिकारी का कहना है कि 'पिछले वर्ष मध्य प्रदेश शासन की अनुमति पर कुछ लोगों ने बालू का खनन किया था।' जबकि छतरपुर के खनिज अधिकारी इसका खण्डन करते हैं, वह कहते हैं कि 'मध्य प्रदेश शासन की ओर से किले के आस-पास अब तक बालू खनन की अनुमति ही नहीं दी गई, यहाँ बाँदा के खनन माफिया चोरी छिपे अवैध खनन करते हैं।' ग्रामीणों का कहना है कि 'अगर पुरातत्व विभाग की अनदेखी व खनन माफियाओं की हरकत बरकरार रही तो बुन्देलखण्ड का यह दुर्लभ किला जल्दी ही जमींदोज हो जाएगा|

1.1.5.1.2 कालिंजर का किला

कालिंजर दुर्ग, भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के बाँदा जिला स्थित एक दुर्ग है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विंध्य पर्वत पर स्थित यह दुर्ग विश्व धरोहर स्थल खजुराहो से ९७.७ किमी दूर है। इसे भारत के सबसे विशाल और अपराजेय दुर्गों में गिना जाता रहा है। इस दुर्ग में कई प्राचीन मन्दिर हैं। इनमें कई मन्दिर तीसरी से पाँचवीं सदी गुप्तकाल के हैं। यहाँ के शिव मन्दिर के बारे में मान्यता है कि सागर-मन्थन से निकले कालकूट विष को पीने के बाद भगवान शिव ने यहीं तपस्या कर उसकी ज्वाला शान्त की थी। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगने वाला कतिकी मेला यहाँ का प्रसिद्ध सांस्कृतिक उत्सव है।

प्राचीन काल में यह दुर्ग जेजाकभुक्ति (जयशक्ति चन्देल) साम्राज्य के अधीन था। बाद में यह १०वीं शताब्दी तक चन्देल राजपूतों के अधीन और फिर रीवा के सोलंकियों के अधीन रहा। इन राजाओं के शासनकाल में कालिंजर पर महमूद गजनवी, कुतुबुद्दीन ऐबक, शेरशाह सूरी और हुमांयू आदि ने आक्रमण किए लेकिन इस पर विजय पाने में असफल रहे। कालिंजर विजय अभियान में ही तोप के गोला लगने से शेरशाह की मृत्यु हो गई थी। मुगल शासनकाल में बादशाह अकबर ने इस पर अधिकार किया। इसके बाद इस पर राजा छत्रसाल ने अधिकार कर लिया। बाद में यह अंग्रेज़ों के नियन्त्रण में आ गया। भारत के स्वतन्त्रता के पश्चात इसकी पहचान एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहर के रूप में की गयी है। वर्तमान में यह दुर्ग भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के अधिकार एवं अनुरक्षण में है।

1.1.5.1.3भूरागढ़ का किला

बाँदा से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित बुन्देलखण्ड की शान कहे जाने वाला गढ़ 'भूरागढ़ किला' आज गुमनामी के अंधेरे में खोता जा रहा है। केन नदी के पास खड़ा यह पुराना उसला आज

यादगार बन कर रह गया है। भूरागढ़ बुन्देला राजाओं की निशानी है। यह किला सत्रह सौ छियालीस सदी का है। कहा जाता है कि इस किले को जीतने के लिए जिन शासकों ने लड़ाई की उनकी कब्रें आज भी इस किले के अन्दर पायी जाती हैं। इस किले का इतिहास इसे बलिदान, देशभक्ति और समानता का प्रतीक मानता है।

चित्र संख्या - 1.3 भूरागढ़ का किला

पहले लोग दूर-दूर से यहाँ अक्सर शामें गुजारने आया करते थे, लेकिन आज भूरागढ़ किला सूनसान पड़ा है। सरकारी संरक्षण में होने के बाद भी यह किला बदरंग नजर आता है। स्थानीय लोग बताते हैं कि इस किले में राजाओं का एक कुआँ पुराना होने के कारण अपनी छवि खोता जा रहा था। जिसे राज्य सरकार ने मरम्मत कर ठीक कराया था। लेकिन आज तक पानी नहीं भरा गया, जिसके कारण वह कुआँ सूखे कूड़े का ढ़ेर बन गया है। यह किला हाँथी दरवाजे के लिए भी प्रसिद्ध था लेकिन आज इसकी दशा दयनीय प्रतीत होती है। इतिहासकारों का मानना है कि भूरागढ़ किला सिर्फ वास्तुकला या इतिहास का एक टुकड़ा बन के रह गया है, जिसे अगर संजो कर नहीं रखा गया तो जल्द ही मिट्टी में बदल जाएगा। 14 जून 1857 में अग्रेजों के विरूद्ध युद्ध हुआ। उस युद्ध में बाँदा के विरोधी सेना के तीन हजार क्रान्तिकारी दुर्ग में मारे गए। लेकिन बाँदा गजेटियर में केवल आठ सौ लोगों के शहीद होने का जिक्र है। भूरागढ़ दुर्ग के आसपास कई शहीदों की मजारें मिली है। मकर संक्रान्ति के अवसर पर शहीदों को श्रृद्धाजंलि देने के लिए हर साल मेले का आयोजन बुन्देलखण्ड पर्यटन विभाग समिति करती है। यहाँ से केन नदी दिखती है और याद आती है नट और राजा भूरा की बेटी की प्रेम कहानी। राजा ने नट से कहा था कि अगर वो केन नदी, एक रस्सी पर चलकर पार कर लेगा तो राजा अपनी बेटी की शादी उससे करवाएंगे। लेकिन बीच नदी में राजा ने रस्सी काट दी और नट डूब के मर गया।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसन्धान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू ढंग से संचालन में कोई बाधा है एवं उस बाधा को दूर किया जा सकता है| वस्तुतः आवश्यकता, जिज्ञासा व असन्तोष को आविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है|

किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है| देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊँचा माना जाएगा| यूँ तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतें और लिखे गए साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाए रखते हैं| यही वजह है कि ऐसी वर्षों पुरानी या यूँ कहें कई सदियों पुरानी ऐतिहासिक इमारतें जो सम्बन्धित राष्ट्र के वर्षों पुरानी इतिहास की गौरव गाथा कहती हैं, उनके संरक्षण का पूरा-पूरा प्रयास किया जाता है| भारत में भी कई ऐतिहासिक मन्दिर, पुरास्थल एवं अन्य इमारते हैं जो स्वयं हमारे विशाल और सम्मानजनक इतिहास की कहानी कहती हैं| लेकिन समय के साथ-साथ इन इमारतों और उनमें रखे गए साहित्य को बहुत नुकसान पहुँचा है| हमने भी परवाह किए बगैर उन अनमोल धरोहरों को मनमाने ढंग से खण्डित किया है|

यह भी सत्य है कि वक्त रहते यदि हम अपनी भूल को पहचान नहीं पाए तो अपनी विरासत को धीरे-धीरे खो देंगे| आज आवश्यकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हो| साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि पुरानी हो चुकी जर्जर इमारतों की मरम्मत की जाये तथा भवनों और महलों को पर्यटन स्थल बनाकर उनकी चमक को बनाये रखने का प्रयास किया जाये| किताबों और स्मृति चिह्न को संग्रहालय में जगह दी जाए | यह तभी सम्भव होगा जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी विरासतों के प्रति जागरूक और जिम्मेदार होगा|

विरासतों को सम्भाल कर रखना इतना आसान नहीं है इसलिए यूनेस्को द्वारा हर वर्ष विश्व विरासत दिवस मनाया जाता है जिसका स्पष्ट उद्देश्य इन इमारतों और उनमें रखी गई धरोहरों की देखभाल करना है|

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है| इस समस्या के अध्ययन से केवल विद्यार्थियों का ही नहीं अपितु अभिभावक, शिक्षक, समाज तथा राष्ट्र को भी लाभ होगा|

1.3 समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार है **"बाँदा जनपद के विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन|"**

1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

शोधार्थी को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के सम्बन्ध में विचार कर लेना चाहिये| शोध वस्तुतः ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित संज्ञान है| शोध में गहन निरीक्षण का प्रत्यय होता है| इसमें किसी सीमित क्षेत्र की किसी समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण होता है| उसकी निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण ही क्रमबद्ध सौद्देश्य सुनियोजित होते हैं|

प्रस्तुत अध्ययन में भूरागढ़ की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जा रहा है| हमारी ऐतिहासिक विरासतें हमें अतीत के बारे में बहुत कुछ सिखाती और बतलाती है| साथ ही इस ऐतिहासिक विरासत को देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं|

वर्तमान समाज एवं आने वाली पीढ़ी को ऐतिहासिक स्थलों को देखने की जिज्ञासा होती है दर्शनीयता, कलात्मकता दृश्यों के प्रति आकर्षण व्यक्ति को बार-बार उस स्थल पर आने की प्रेरणा प्रदान करता है| उन्हें दुर्गम स्थलों, गुफाओं, प्राकृतिक दृश्यों को देखने की जिज्ञासा रहती है साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों, वर्गों, समुदाय के लोग जब किसी स्थान विशेष पर आते हैं तो स्थानीय जनता का उनसे सम्पर्क होता है| वे उन्हें आवश्यकतानुसार आश्रय, भोजन आदि संसाधनों को उपलब्ध कराते हैं| उनकी हर प्रकार से व्यवस्था करते हैं| इस प्रकार से उनमें एक दूसरे को समझने व परखने के साथ-साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भावना की अनुभूति होती है| किन्तु आज हमारी ऐतिहासिक विरासतों को पर्याप्त संरक्षण एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है| इसके आस-पास साफ सफाई न होने से लोगों का रुझान इस ओर कम होता जा रहा है| इस समय कई स्मारक अतिक्रमण का शिकार हो गए हैं| आस-पास बस्ती होने की वजह से इसके अस्तित्व को खतरा हो रहा है| जब तक लोग अपने ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरुक नहीं होंगे तब तक इन विरासतों को संरक्षण दे पाना मुश्किल होगा| अतः प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है|

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

परिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिन्तन द्वारा सम्पूर्ण समस्या क्षेत्र से बहार निकल कर स्पष्ट करना है| प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्याख्या निम्नानुसार है-

1.5.1 बाँदा जनपद- बाँदा एक ऐतिहासिक शहर है। ये शहर बाँदा जिले का मुख्यालय भी है। बाँदा के चारो तरफ अनेक पर्यटन स्थल हैं। चित्रकूट यहाँ से करीब 60 किमी, कालिंजर करीब 60 किमी है। बाँदा केन नदी-तल से प्राप्त गोमेद रत्नों के लिए प्रसिद्ध है, जिनका निर्यात किया

जाता है। यहाँ विभिन्न मस्जिदें और हिन्दू मन्दिर हैं। यहाँ की केन नदी भारत की एक प्रमुख नदी है। केन नदी में शजर पत्थर पाया जाता है जिसमें प्राकृतिक रूप से प्राकृतिक दृश्य बने रहते हैं, ये कुदरत का बेहतरीन करिश्मा है। यहाँ के प्रमुख मन्दिरों में माँ महेश्वरी देवी का सात खण्ड का मन्दिर, संकट मोचन मन्दिर, माँ काली देवी मन्दिर आदि प्रमुख हैं, वामदेवेश्वर मन्दिर आदि प्रमुख हैं।

1.5.2 विद्यार्थी- According to wikipedia - **विद्यार्थी** वह व्यक्ति होता है जो कोई चीज सीख रहा होता है| विद्यार्थी दो शब्दों से बना होता है- "विद्या" + "अर्थी" जिसका अर्थ होता है 'विद्या चाहने वाला'| विद्यार्थी किसी भी आयु वर्ग का हो सकता है बालक, किशोर, युवा या वयस्क| लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कुछ सीख रहा होता है|

1.5.3 भूरागढ़ दुर्ग- भूरागढ़ से तात्पर्य बाँदा जनपद में 25º47′67′′N अक्षांश 80º30′89′′E देशान्तर पर स्थित और बुन्देल शासकों द्वारा 17 वीं शताब्दी में निर्मित **दुर्ग** से है|

1.5.4 ऐतिहासिक विरासत- ऐतिहासिक विरासत स्थल खास स्थलों जैसे- वन क्षेत्र, पर्वत, झील, मरुस्थल, स्मारक, भवन इत्यादि को कहा जाता है| प्रत्येक विरासत स्थल उस देश विशेष की सम्पत्ति होती है जिस देश में वह स्थल होता है| प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में **ऐतिहासिक विरासत** से अभिप्राय बाँदा की ऐतिहासिक विरासत के स्थल से है|

1.5.5 जागरूकता- जागरूकता यानी सजग जीवन- चैतन्य जीवन अर्थात चिन्तन पर आधारित जीवन, मन्थन से निकला जीवन| जागरूकता यानी बाहरी संसार भीतरी संसार की सम्पूर्ण जानकारी, उचित-अनुचित की जानकारी| प्रस्तुत लघु शोध में **जागरूकता** से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत की जानकारी से है|

वेबस्टर डिक्शनरीज के अनुसार- "जागरूकता का अर्थ देखना, समझना, विचारना या ज्ञान को प्राप्त करना है|"

1.5.6 अध्ययन-किसी विषय के सब अंगों या गुण तत्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे समझने या पढ़ने की क्रिया अध्ययन कहलाती है|

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

- ❖ भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का निम्न के सन्दर्भ में अध्ययन करना-
  - स्थापत्य एवं वास्तुकला
  - विशेषता एवं महत्व
  - ऐतिहासिक विरासत को चिह्नित करना|
- ❖ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता के अध्ययन हेतु भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना|
- ❖ भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना|
- ❖ भूरागढ़ दुर्ग के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना|
- ❖ भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत में पर्यटन की सम्भाव्यता का अध्ययन करना|
- ❖ भूरागढ़ दुर्ग में पर्यटन विकास की समस्याओं का अध्ययन करना|

❖ भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना|

1.7 अध्ययन के चर

शोध अध्ययन के सन्दर्भ में निम्नलिखित चरों को प्रमुख रूप से लिया जाएगा|

मापदण्ड चर:-

भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता

वर्गीकरण चर:-

लिंग

1.8 परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत लघु शोध की निम्नलिखित परिकल्पना है-

1. छात्र-छात्राओं की भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता में अन्तर पाया गया एवं छात्राएँ छात्रों की अपेक्षा अधिक जागरूक हैं|

1.9 अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी अनुसन्धान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है| कोई भी शोधार्थी शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करता है तथा विस्तृत

अध्ययन के स्थान में गहन अध्ययन को वरीयता देता है| समस्या का स्वरुप साधारणत: अधिक व्यापक होता है| समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है| सीमांकन अध्ययन की चहारदीवारी होता है| शोधार्थी ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है|

- प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के विद्यार्थियों तक सीमित है|

1.10 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

भारत की कला-संस्कृति एवं इसका इतिहास अत्यन्त समृद्ध है एवं हमारी कला-संस्कृति की आधारशिला हमारे विरासत स्थल हैं। इन स्थलों के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के साथ-साथ इनका व्यापक आर्थिक महत्त्व भी है| हमारी एक बहुत बड़ी समस्या ऐतिहासिक विरासतों को सुरक्षित रखने की भी है| पूरे देश में ऐसी अनगिनत प्राचीन और ऐतिहासिक महत्व की इमारतें हैं जिनकी देखभाल ठीक से नहीं हो रही हैं| कुछ इमारतें तो पूरी तरह उपेक्षित हैं और अगर उन पर ध्यान न दिया गया तो वे गिर जाएँगी| सरकारी विभाग अपनी सीमा और साधनों की कमी के कारण केवल उन्हीं विरासतों की देखभाल करते हैं जो उनकी सूची में शामिल हैं पर यह काफ़ी नहीं है| देश की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की ज़िम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है वरन यह लोगों का मौलिक कर्तव्य भी है| किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब लोग अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होगे| अतः इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत लघु शोध कार्य किया जा रहा है

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

शोध कार्य के पूर्व सम्पन्न अनुसंधानों को सामूहिक रुप में अनुसन्धान साहित्य की संज्ञा दी जाती है| सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसन्धान कर्ता का अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है| एक अनुसन्धान दूसरे अनुसन्धान के लिए सहायक सिद्ध होता है| इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती है, दूसरे पहले जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश डालकर शोधग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है| *(गुप्ता, एस. पी.पृष्ठ 54)*

अनुसन्धान कार्य में साहित्य सर्वेक्षण की समीक्षा करने की आवश्यकता, उपयोगिता तथा महत्व स्वयं सिद्ध हैं| अनुसन्धान के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के बिना अनुसन्धान कर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान हो जाता है| साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ही अनुसन्धान कर्ता किसी क्षेत्र में क्या हो चुका है? किस क्षेत्र में क्या करना शेष है? से अलग करके अपनी समस्या को सार्थक, मौलिक तथा अद्वितीय बनाता है एवं अनुसन्धान की एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार करने में मदद करता है| अनुसन्धान में साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्व के बारे में विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से विचार व्यक्त किए हैं|

जॉन डब्लू. बैस्ट के अनुसार "व्यवहारिक दृष्टि से समस्त मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है| अन्य जीवों, प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारंभ करना पड़ता है, से भिन्न मान पूर्व में संग्रहित व अभिलेखित ज्ञान से निर्माण करता है| ज्ञान के अथाह भण्डार में उसके सतत योगदान ही मानव प्रयासों के सभी क्षेत्रों में प्रगति को सम्भव बनाते हैं|"

डब्लू.आर. बोर्ग ने साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्व की चर्चा करते हुए कहा है कि, "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला की रचना करता है जिस पर समस्त भावी कार्य किया जाता है| यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ज्ञान की इस आधारशिला को दृढ नहीं कर लेते हैं हमारा कार्य सतही व नवसिखुआ होने की सम्भावना है एवं प्राय: पूर्व में किसी अन्य के द्वारा अच्छे ढंग से किया गया कार्य को दोहराना रहता है|

किसी भी अनुसन्धान कार्य को उचित रुप से सम्पादित करने के लिए सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक होता है, क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने अभीष्ट अनुसन्धान क्षेत्र में अर्थपूर्ण प्रश्न की पहचान करने एवं ठोस तथा वस्तुनिष्ठ आधार प्राप्त करने में समर्थ होता है तथा वह पूर्वान्वेषित अनुसन्धान क्षेत्र या किसी समस्या पर पहले किए गए शोध द्वारा उत्तर पुनः शोध का विषय बनने की दिशा में पुनरावृत्ति दोष से बच सकता है| सम्बन्धित साहित्य से अधोलिखित जानकारी उपलब्ध होती है

- ❖ किसी पूर्व अन्वेषित क्षेत्र में शोधों के अंतर्गत ऐसे चरों के विषय में संकेत प्राप्त होते हैं जिन्हें महत्वपूर्ण प्रमाणित किया जा चुका है|
- ❖ पूर्व सम्पादित कार्यों तथा अन्य कार्यों की, जिन्हें सार्थक ढंग से आगे बढ़ाया जा सकता है या लागू किया जा सकता है, सूचना प्राप्त होती है|

- ❖ किसी क्षेत्र विशेष के अंतर्गत निष्कर्षों की दृष्टि से संपन्न कार्यों की यथास्थिति का पता लगता है|
- ❖ लिए गए अनुसन्धान विषय में किस विधि का प्रयोग उपयुक्त होगा, कौन से उपकरण उचित होंगे, किस प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा इत्यादि कि जानकारी मिलती है|
- ❖ लिए गए अनुसन्धान विषय की सफलता तथा इसकी उपयोगिता के संबंध में पूर्व अनुमान लगाया जा सकता है|
- ❖ समस्या के समाधान हेतु अनुसन्धान की समुचित विधि का सुझाव देता है|
- ❖ यह अब तक उस क्षेत्र में से हो चुके कार्य की सूचना देता है तथा समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा करता है|

2.2 ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित शोध अध्ययन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अन्य ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित विभिन्न सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया, जिसमें शोधकर्ताओं द्वारा प्राप्त निष्कर्षों को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है-

- **सिंह रमिता (2001)** ने *"कालिंजर की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व तथा पर्यटन विकास की सम्भावनाएँ"* पर अध्ययन किया| परिणामस्वरुप उन्होंने यह पाया कि पर्यटकों की दृष्टि से अभी तक कालिंजर अभावग्रस्त है| यहाँ पर आवागमन के साधनों का, पर्यटकों हेतु, मार्गदर्शक और बहुत सी सुविधाओं का अभाव है, जिसके कारण यहाँ का विकास सम्भव नही हो सका|

- **मिश्र, प्रत्युष (2002)** ने *"बुन्देलखण्ड में पर्यटन विकास नियोजन कालिंजर के विशेष सन्दर्भ में"* पाया की बुंदेलखंड के कालिंजर सहित संपूर्ण क्षेत्र में सार्वजनिक त्योहारों तथा पारिवारिक उत्सवों में संपन्न होने वाले परंपरागत लोक नृत्यों में राई, सैरा, झिझिया, दिवारी गायन, नृत्य आदि मुख्य हैं| विभिन्न मांगलिक अवसरों एवं उत्सवों में यहाँ महिलाओं द्वारा भूमि व भित्ति चित्रण तथा अलंकरण अत्यंत मनोहारी तथा पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है| इसी प्रकार वर्ष भर संपन्न होने वाले पर्व एवं त्योहारों में हल्दी, गेरु, चावल, मिट्टी आदि से घरों में नाना आकर्षण चित्रण किए जाते हैं| इस क्षेत्र में पूजन हेतु पुतारियों की आकृतियां बनाने का प्रचलन है|

- **रामसजीवन (2006)** ने *"बुंदेलखंड के दुर्ग एक ऐतिहासिक अध्ययन"* में पाया की सम्पूर्ण बुंदेलखंड में प्राचीनकाल से लेकर उत्तर मध्य युग तक 400 से अधिक दुर्ग थे| जिनमें से अधिकाँश दुर्ग नष्ट हो चुके हैं| शोध प्रबंध के माध्यम से दुर्ग का पर्याप्त बोध हुआ इनकी वास्तु विधि का बोध हुआ| दुर्ग में उपलब्ध आवासीय स्थल, धर्मस्थल, जलाशय तथा सामाजिक स्थलों का बोध हुआ| अनेक दुर्गों में प्राचीन वेशभूषा के चित्र अस्त्र-शस्त्र आभूषण आदि भी देखने को मिले जो विभिन्न संग्रहालयों में संग्रहित हैं| साथ ही इस शोध प्रबंध के माध्यम से बुंदेलखंड में पर्यटन व्यवसाय को प्रोत्साहन मिलेगा जो व्यक्ति बुंदेलखंड में पर्यटन के दृष्टिकोण से आते हैं, वह इन दुर्गों को देखेंगे जिससे सरकार की आर्थिक आय उपलब्ध होगी तथा जो समस्याएं पर्यटन के लिए यहाँ हैं उनका भी समाधान होगा| इसके साथ ही आवासीय स्थल बनेंगे तथा बेरोजगार युवकों को अनेक प्रकार के रोजगार पर्यटन व्यवसाय के माध्यम से उपलब्ध होंगे|

2.3 भूरागढ़ दुर्ग से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि

अमर उजाला ब्यूरो बाँदा \ 18 Jan 2021

भूरागढ़ दुर्ग की भूमि में गोशाला की मांगी अनुमति

बांदा। केन नदी किनारे भूरागढ़ किले में खंडहर के रूप में निष्प्रयोज्य पड़ी जमीन पर अस्थायी गोशाला के लिए अनुमति देने की मांग डीएम से की गई है। राष्ट्रीय गो सेवा मिशन की इस अर्जी पर बुंदेलखंड विकास बोर्ड उपाध्यक्ष अयोध्या सिंह पटेल ने भी संस्तुति की है।

राष्ट्रीय गो सेवा मिशन सेवा संघ इकाई बांदा ने डीएम को दिए पत्र में कहा कि भूरागढ़ दुर्ग के खंडहर में तमाम परती जमीन हैं। लोगों ने कब्जा कर मकान बना लिए हैं। अवैध कब्जे अभी भी जारी हैं। शासन-प्रशासन की उपेक्षा से यह ऐतिहासिक खंडहर नष्ट हो रहा है। कहा कि विकलांग गो संरक्षण केंद्र अस्थायी रूप से खोलकर गोवंश का संरक्षण करना चाहते हैं।

विकलांग, असहाय व घायल अन्ना पशुओं को इसमें संरक्षण दिया जाएगा, इसकी अनुमति दी जाए। अर्जी देने वालों में संघ के मदन मोहन शर्मा, शिवकुमार सिंह आदि शामिल हैं। उधर, संघ के इस पत्र पर बुंदेलखंड विकास बोर्ड उपाध्यक्ष ने डीएम को दिए पत्र में कहा कि संघ के संचालक स्वामी कृष्णानंद महाराज हैं। पटेल ने गो संरक्षण के लिए भूमि की अनुमति देने का अनुरोध किया है।

दैनिक जागरण 14 Jan 2014

भूरागढ़ किले में मेला आज, तैयारियां पूरीं

बांदा कार्यालय: बांदा के भूरागढ़ की केन नदी किनारे सच्चे प्यार के साझा शहादत का अदभुत किस्सा संजोए नटबली महराज का मंदिर हर साल की 14 जनवरी को प्रेमी जोड़ों से गुलजार हो जाता है। साथ ही मंगलवार को लगने वाले मेले में आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से लोग आकर लुत्फ उठाएंगे।

बताते हैँ कि 651 वर्ष पूर्व ग्राम भूरागढ़ में भूरा नामक एक नट रहता था। जिसका भूरागढ़ राज घराने से ताल्लुक रखने वाली राजकुमारी से प्यार था। दोनों ही एक-दूसरे को बेपनाह मोहब्बत करते थे। इनके प्यार का परवान राजघराने के लोगों को नागवार गुजर रहा था। प्रेमिका पक्ष के लोगों ने शर्त के तहत उलझा कर षड़यंत्र रचकर प्रेमी को मरवा दिया। प्रेमी की मौत की खबर सुन प्रेमिका ने भी अपनी जान दे दी। तब से इन दोनों की प्रेम गाथा अमर हो गई। प्रेमी की याद में लोगों ने नदी किनारे उनका मंदिर बनवा दिया। प्रेमी यह गाथा इतिहास व गुमनामी के पन्नों में भटकने की बजाय लोगों के दिलों में बसती चली गई। साथ ही केन की झरझर उठती गिरती लहरें भी शायद इस अनूठी मोहब्बत को पैगाम देती हुई सदियों से इस सच्ची व अद्भुत प्रेम कहानी की चश्मदीद गवाह बनी हुई है।

2.4 निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शोधकर्त्री ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित पिछले शोध अध्ययनों की समीक्षा की है| इसमें कुछ समाचार पत्रों तथा शोध अध्ययनों से जानकारी प्राप्त की| सम्बन्धित अध्ययनों की समीक्षा से पता चलता है कि, बुंदेलखंड के बाँदा जिले की ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित अध्ययनों की संख्या बहुत कम है| शोधकर्त्री ने कालिंजर के एक हज़ार वर्ष पुराने कतिकी मेले तथा दुर्ग परिक्षेत्र में लगी भीषण आग से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की साथ ही शोध से सम्बन्धित **बुंदेलखंड में पर्यटन विकास नियोजन भूरागढ़ के विशेष संदर्भ में** तथा **बुंदेलखंड के दुर्ग एक ऐतिहासिक अध्ययन** का अध्ययन किया इसके अलावा **भूरागढ़ की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व तथा पर्यटन विकास की सम्भावनाएँ** का

अध्ययन किया| अध्ययनों के उपरांत शोधार्थी ने **" विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन"** को वर्तमान में आवश्यक मानते हुए शोध अध्ययन करना उचित समझा| प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों में ऐतिहासिक विरासत के प्रति समझ विकसित करने में मदद करेगा|

अध्याय तृतीय
भूरागढ़ दुर्ग: एक परिचय

3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भूरागढ़ दुर्ग का ऐतिहासिक महत्व बुन्देला शासन् काल से महाराजा छत्रसाल के पुत्र हृदयशाह और छोटे पुत्र जगतराय से जुड़ा है। महाराज छत्रसाल के आधीन सिमोनी, पलानी, दरसेण्डा सेवढ़ा, बदौसा, रसिन, तरहुवाँ, गहोरा आदि थे, उन्होंने राज्य का विभाजन कर दिया, बदौसा, तरहुवाँ; चित्रकूट हृदयशाह के हिस्से में आये, **बाँदा भूरागढ़ जगतराय को मिले**, जलालपुर, दरसेण्डा रानी विजै कुँवरि को मिले, रसिन, गहोरा स्वतन्त्र रहे|

बाँदा में **भूरागढ़ किला**, जैसे प्राचीन एवं दिव्य स्थल मौजूद हैं। पहले समय मे कभी यहाँ कोल भीलो की बस्तियाँ थी। इसके स्मृति चिह्न आज भी यहाँ उपलब्ध हैं। केन नदी के किनारे, 17 वीं शताब्दी में भूरे पत्थरों से बनाए गए भूरगढ़ किले के खण्डहर हैं। स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान यह स्थान महत्वपूर्ण था। इस स्थान पर एक मेला आयोजित किया जाता है, जिसे 'नटबली का मेला' कहा जाता है।

जगतराय के पुत्र कीरत सिंह ने सन् 1746 में भूरागढ़ दुर्ग का जीर्णोद्धार कराया था। दुर्ग की देखरेख नोने अर्जुन सिंह किया करते थे। मस्तानी का साथी अली बहादुर प्रथम सन् 1787 में बाँदा का शासन् देखने लगा, सन् 1792 के आसपास इसका युद्ध भूरागढ़ के प्रशासक नोने अर्जुन सिंह से हुआ, तथा हिम्मत बहादुर से भी युद्ध हुआ। उसके पश्चात यह दुर्ग नवाबों के अधिकार में कुछ समय के लिये आया किन्तु राजाराम दउवा और लक्ष्मण सिंह दउवा ने उसे अधिकार में ले लिया। जिसका शासन् गुमान सिंह के नाती के हाथों में था, विश्वास पात्र होने के नाते बाँदा का शासन् पुनः नोने अर्जुन सिंह को सौंप दिया। इसके मृत्यु के पश्चात अली बहादुर का अधिकार दुर्ग पर हो गया। सन् 1802 में अली बहादुर की मृत्यु हो गई तथा कुछ समय के लिये गौरिहार महाराज के हाथों में प्रशासन् रहा।

14 जून 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध प्रारम्भ हो गया जिसका नेतृत्व नवाब अली बहादुर द्वितीय ने किया, इस क्रान्ति में अंग्रेजों का साथ (गद्दार) रणछोण सिंह दउवा ने दिया। यह विद्रोह इतना भयानक हुआ कि इस युद्ध में इलाहाबाद, कानपुर तथा बिहार के क्रान्तिकारी भी आ गये। इस युद्ध में ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट मि० काकरेल की हत्या 15 जून 1857 को क्रान्तिकारियों ने कर दी।

16 अप्रैल 1858 में ह्टिलक का आगमन हुआ, इससे बाँदा की विद्रोही सेना का युद्ध हुआ। इस युद्ध में तीन हजार (three thousands) क्रान्तिकारी दुर्ग में मारे गये लेकिन बाँदा गजेटियर में केवल 800 लोगों के शहीद होने का जिक्र है। 18 जून 1859 में 28 व्यक्तियों के नाम विशेष तौर पर मिलते हैं। जिन्हें अंग्रेजों की अदालत में मृत्यु दण्ड व काले पानी की सजा सुनाई गयी थी। भूरागढ़ दुर्ग के आसपास अनेक शहीदों की मज़ारे मिली हैं। इसी युद्ध में सरबई के सन्निकट रहने वाले नटों ने भी अपना बलिदान दिया था, जिसकी स्मारक नटबली दुर्ग के नीचे बनी हुई है। मकर संक्रान्ति के अवसर पर शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिये प्रति वर्ष एक मेले का आयोजन बुन्देलखण्ड पर्यटन विकास समिति कराती है।

भूरागढ़ दुर्ग, भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के बाँदा जिला स्थित एक दुर्ग है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विंध्य पर्वत पर स्थित यह दुर्ग विश्व धरोहर स्थल खजुराहो से 120.7 किमी दूर है। इसे भारत के सबसे प्रसिद्द दुर्गों में गिना जाता रहा है। मकर संक्रान्ति के अवसर पर लगने वाला मेला यहाँ का प्रसिद्ध सांस्कृतिक उत्सव है।

इतिहास

वो कहते हैं ना, आप जितनी गहराई में उतरोगे, किसी भी चीज़ की गहराई उसके साथ ही और भी ज़्यादा गहरी होती जाएगी। ऐसा ही कुछ इतिहास के लिए भी कहा जा सकता है। जैसे-जैसे हम इतिहास के करीब पहुँचने लगते हैं, वैसे वैसे वह और भी ज़्यादा रहस्यमयी और नया हो जाता है। मानो, अभी तक जो भी जाना हो, वो सब बस इतिहास के कुछ पहलू ही हैं, तो आज हम आपको ऐसे ही किसी रोमांचक सफर पर लेकर जा रहे हैं, जहाँ आपको इतिहास, मोहब्बत और जंग सबका संगम मिलेगा। तो चलिए चलना शुरू करते हैं..... भूरागढ़ किला, यूपी के जिला बाँदा के केन नदी के पास बसा हुआ है। किले से ढलते सूरज को देखना, आँखों को एक अलग

ही तरह की ख़ुशी देता है। किले का इतिहास और महत्व महाराजा छत्रसाल के पुत्रों बुन्देला शासन काल और हृदयशाह और जगतराय से जुड़ा हुआ है।

१ जनवरी १७०७ ई० को सम्राट औरंगजेब ने फीरोजजंग के सुझाव पर बुन्देल केसरी छत्रसाल को राजा की उपाधि प्रदान की। उसके उत्तराधिकारी इहादुरशाह ने विजित क्षेत्र को मान्यता प्रदान की। सन् १७२१ ने दिलेरखाँ के सेनापतित्व में एक विशाल सेना आई, मड़ा मुगल आधीन था, मौदहा के पास मुगल सेना को पराजित कर वापस कर दिया। दिसम्बर १७२६ मुहम्मदखाँ बङ्गश सेना लेकर आया उसने तरहवाँ पर अधिकार कर लिया, दूसरी बार जैतपुर जीत लिया। छत्रसाल ने शाहू महाराज से सहायता माँगी, पेशवा बाजीराव तथा बुन्देली सेना ने जैतपुर घेर लिया, कायमखाँ को तरहवाँ में रोके रखा, बंगश को समर्पण करना पड़ा, व बुन्देलखण्ड न आने का वचन दिया। महाराज छत्रसाल के आधीन सिमोनी, पलानी, दरसेण्डा सेवढ़ा, बदौसा, रसिन, तरहवाँ, गहोरा आदि थे, उन्होंने राज्य का विभाजन कर दिया, बदौसा तरहवाँ चित्रकूट हृदयशाह के हिस्से में आये, बाँदा भूरागढ़ जगतराय को मिले, जलालपुर दरसेण्डा रानी विजै कुँवरि को मिले, रसिन गहोरा स्वतन्त्र रहे|

सन् १७३८ में राजा जगतराय ने बाँदा मराठों को चौथ स्वरूप दिया। सन् १७५३ में शमशेर बहादुर पुत्र मस्तानी कुवरि तृतीयांश लेने आये, मुधोजी हरि बाँदा में रहने लगे। कालिंजर के किलेदार ने विश्वासघात कर किला बुन्देलों को सौंप दिया, सिहुड़ा की जागीर छत्रसाल ने सन् १७८३ में सतगुरु सेवा में लगाई थी, वह जगतराय के ज्येष्ठ पुत्र कीरत सिंह को प्राप्त हुई, सन् १७४६ में भूरागढ़ का पुनरुद्धार या जीर्णोद्धार हुआ।(**बाँदा वैभव सम्पादक-डॉ रमेश चन्द्र श्रीवास्तव पेज न.135)**|

किले की देखरेख की ज़िम्मेदारी नोने अर्जुन सिंह को दी गयी थी। भूरागढ़ का इतिहास कुछ ऐसा है कि सन् 1787 में बाँदा का शासन् अली बहादुर प्रथम के हाथों में आ गया। अली बहादुर प्रथम

का युद्ध सन् 1792 के लगभग भूरागढ़ के प्रशासक नोने अर्जुन सिंह से हुआ। जिसके बाद किला कुछ समय तक नवाबों के शासन में रहा। लेकिन कुछ समय बाद ही राजाराम दउवा और लक्ष्मण सिंह दउवा ने किले को अपने अधिकार में ले लिया, जिसका शासन् गुमान सिंह के नाती के हाथों में था। नोने अर्जुन सिंह पर ज़्यादा विश्वास होने की वजह से उन्हें बाँदा का शासन् सौंप दिया गया। लेकिन कुछ समय के बाद अर्जुन सिंह की मृत्यु हो गयी । जिसके बाद अली बहादुर किले पर शासन् करने लगा। सन् 1802 में अली बहादुर की भी मौत हो गयी और किले का शासन् गौरिहार महाराज के हाथों में चला गया।

किले से जुड़ा क्रान्तिकारियों का इतिहास

ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ महान स्वतन्त्रता संग्राम 14 जून 1857 को हुआ है। युद्ध का नेतृत्व बाँदा में अली बहादुर द्वितीय ने भूरागढ़ किले से किया। युद्ध सोंच से भी ज़्यादा भयानक था। नवाबों द्वारा अंग्रेज़ों के खिलाफ इस लड़ाई में कानपूर, इलाहबाद और बिहार के क्रान्तिकारी भी शामिल हुए। 5 जून 1857 को, क्रान्तिकारियों ने ज्वाइंट मजिस्ट्रेट कॉकरेल की हत्या कर दी। मजिस्ट्रेट कॉकरेल को अंग्रेज़ों की अदालत में काले पानी और मृत्यु दण्ड की सज़ा सुनाई गयी। 16 अप्रैल 1858 को व्हिटलुक बाँदा पहुँचे और उन्होंने बाँदा की क्रान्तिकारी सेना के खिलाफ लड़ाई लड़ी। इस लड़ाई में लगभग 3,000 क्रन्तिकारी भूरागढ़ किले में मारे गए। लेकिन बाँदा के राजपत्र में सिर्फ 800 लोगों के ही शहीद होने का ज़िक्र किया गया। इस युद्ध में 28 व्यक्तियों के नाम विशेषतौर पर मिलते हैं। किले के अन्दर और बाहर कई क्रान्तिकारियों की कब्रें पायी जाती हैं। किला कई सालों तक ब्रिटिशों के अधीन रहा । लेकिन कुछ लोगों की वजह से किला विनाश की कगार पर पहुँच गया। तहखाने और निचली मंज़िले गन्दगी और कचरे की वजह से नीचे दबकर रह गयी।

किले को माना जाता है, बलिदान और देशभक्ति का प्रतीक

भूरागढ़ का किला सिर्फ एक इतिहास का पन्ना या टुकड़ा नहीं है। जो की वक़्त के साथ पुराना हो जायेगा या ढह जायेगा। यह बलिदान, देशभक्ति, सम्प्रभुता और समानता का प्रतीक है। यह किला उस लड़ाई का गवाह है जहाँ अलग-अलग सम्प्रदायों, नस्लों, समुदायों, धर्मों के लोगों ने एक दूसरे का हाँथ थाम, विदेशी शासकों के खिलाफ लम्बी जंग लड़ी थी। और इसी लड़ाई में ब्रिटिश शासन् से आज़ादी प्राप्त करने के लिए बाँदा को भारत का पहला शहर बनाया गया था। बाँदा का इतिहास अभी और आने वाली कई पीढ़ियों को गौरवान्वित होने का मौका देता रहेगा।

मकर संक्रान्ति के दिन लगता है 'आशिकों का मेला'

मकर संक्रान्ति से 5 दिन पहले भूरागढ़ किले में 'आशिकों का मेला' लगता है। अपने प्रेम को पाने के लिए हज़ारो जोड़े इस दिन यहाँ आकर विधिवत पूजा करते हैं और मन्नत माँगते हैं। हर साल इस किले के नीचे बना नटबाबा के मन्दिर में मेला लगाया जाता है। मेले में दूर-दूर से लोग आते हैं। कहते हैं कि यह जगह प्रेम करने वालों के लिए इबादगाह से कम नहीं है। जहाँ आकर उन्हें लगता है कि इस जगह मन्नत माँगने से उन्हें उनका मनचाहा प्रेम मिल जाएगा। हालांकि, इस मन्दिर और नटबाबा के बारे में आपको इतिहास में कुछ नहीं मिलेगा। लेकिन बुन्देलियों के दिलों में आपको नटबाबा की कहानी ज़रूर मिलेंगी।

क्या है नटबाबा मन्दिर की कहानी ?

माना जाता है कि तकरीबन 600 साल पहले महोबा जिले के सुगिरा के रहने वाले नोने अर्जुन सिंह भूरागढ़ दुर्ग के किलेदार थे। किले से कुछ दूर मध्यप्रदेश के सरबई गाँव में रहने वाला नट जाति का 21 साल का युवक किले में नौकर था। किलेदार की बेटी को नट बीरन से प्यार हो गया। जिसके बाद वह अपने पिता यानी किलेदार से नट से शादी करवाने के लिए ज़िद्द करने लगी। नोने अर्जुन सिंह ने अपनी बेटी के सामने शर्त रखी कि अगर बीरन नदी

के उस पार बाम्बेश्वर पर्वत से किले तक नदी, सूत की रस्सी (कच्चे धागे की रस्सी) पर चढ़कर किले तक आएगा तभी उसकी शादी राजकुमारी के साथ करायी जाएगी। बीरन ने नोने अर्जुन सिंह की शर्त मान ली। ख़ास मकर संक्रान्ति के दिन वह सूत पर चढ़कर किले तक आने लगा। चलते-चलते उसने नदी पार कर ली। लेकिन जैसे ही वह किले के पास पहुँचा, नोने अर्जुन सिंह ने किले से बंधे सूत के धागे को काट दिया।

बीरन ऊँचाई से चट्टानों पर आ गिरा और उसकी मौत हो गयी। जब नोने अर्जुन सिंह की बेटी ने किले की खिड़की से बीरन की मौत देखी तो वह भी किले से कूद गयी और उसी चट्टान पर उसकी भी मौत हो गयी। दोनों प्रेमियों की मौत के बाद, किले के नीचे ही दोनों की समाधि बना दी गयी। जिसे की बाद में मन्दिर के रूप में बदल दिया गया।

सत्ती चौरा क्या है ?

सन् 1762 में बाँदा के नवाब युद्ध जीतने के लिए कालिंजर किले गए थे, तभी उनके साथ ही उनके खजांची नवाब भी युद्ध पर गए थे। लगभग एक साल तक युद्ध चला, जिसमें खजांची शहीद हो गए। तभी उनकी पत्नी भूरागढ़ किले के स्थान पर सती हो गयी। तभी से यह स्थान सत्ती चौरा के नाम से भी जाना जाने लगा।

राजाओं का एक पुराना कुआँ

कहा जाता है कि किले में राजाओं का कुआँ भी था। स्थानीय लोग बताते हैं कि कुआँ बहुत पुराना था जो की सही देखरेख न होने के कारण अपनी छवि खोता गया। हालाँकि, सरकार द्वारा कुँए की मरम्मत के नाम पर थोड़ा-बहुत कुछ काम किया था। लेकिन कुँए में आजतक पानी नहीं भरवाया गया, जिसकी वजह से कुआँ सिर्फ एक कूड़े का ढेर बनकर रह गया। किले के परिसर में एक बावली भी है। बावली में बरसात का पानी इकट्ठा हो जाता है। बावली के बगल में ही किले का गुम्बद है, जो दूर से ही दिखाई देता है।

इस तरह से पहुंचे

हवाईजहाज से - सबसे करीबी हवाईअड्डा खजुराहो हवाई अड्डा है। यहाँ से भूरागढ़ किले की दूरी 150 किमी. है। आप खजुराहो हवाईअड्डे से किसी भी बस या यातायात के ज़रिये महोबा पहुँच सकते हैं।

ट्रेन से - बाँदा स्टेशन, यहाँ से किले की दूरी सिर्फ3 किमी. है।

बस से - बाँदा बस स्टैण्ड बाँदा, यूपी का जिला है, जो की सुविधाओं से भरपूर है। यहाँ आकर आपको रहने या खाने पीने की फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं है। किला पूरे वक़्त खुला रहता है। लेकिन अगर आप सुबह आते हैं तो आपके पास पूरा किला घूमने का ज़्यादा समय होगा और आप किले के इतिहास को भी जान पाएंगे। और हाँ, अगर आप यहाँ मन्नत मांगने के लिए आना चाहते हैं तो मकर संक्रान्ति का दिन आपके लिए सबसे बेहतर होगा। इस दिन का अपना ही एक महत्व है। यह जगह अपने इतिहास, क्रान्तिकारियों का जज़्बा, अंग्रेज़ो के खिलाफ जंग और दो प्रेमी जोड़ों की कहानी का प्रतीक है। जिसे लोग जब भी देखते हैं, किले से जुड़ी सारी चीज़ों खुद ही उनकी आँखों के सामने आ जाती है। यह किला अपने अस्तित्व और वास्तुकला से अपनी कहानी खुद ही कहता दिखाई पड़ता है। पर्यटकों के लिए यहाँ रोमांच, राज़, जंग, प्रेम और दुश्मनी सब मिलेगी। तो एक बार यहाँ ज़रूर आए और खुद भी महसूस करके देखिए कि किले की दीवारें आपसे अपनी कहानियाँ बयाँ करती हैं|

3.2 भूरागढ़ दुर्ग के महत्वपूर्ण स्थल

3.2.1 बावड़ी

भूरागढ़ किले की उस समय की यह प्रसिद्ध बावड़ी है। ऐसा उल्लेख मिलता है कि बुन्देला शासनकाल के समय राजघराने की औरतें यहीं पर स्नान करती थीं। यह भी उल्लेख मिलता है कि इस बावड़ी के छोटे द्वार से नवाब टैंक तक अन्दर-अन्दर सुरंग जाती है। कहा जाता

है कि यहाँ की प्रसिद्ध रानी यहाँ से होते हुये नवाब टैंक में स्नान करती थीं और इसी सुरंग से वापस आती थीं।

चित्र संख्या – 3.2.1 बावड़ी

3.2.2 तोप रखने का स्थान

ऐसा उल्लेख मिलता है कि उस समय यहाँ पर सुरक्षा की दृष्टि से तोप रखी जाती थीं। यहाँ के स्थानीय लोग बताते हैं कि यहाँ की तोपें अब चरखारी के किले में सुरक्षित हैं।

चित्र संख्या – 3.2.2 तोप रखने का स्थान

3.2.3 मोती महल

कहते हैं कि बुन्देला शासनकाल के समय यह महल मोतियों से जड़ा हुआ था। इस कारण इस महल का नाम मोती महल पड़ा। अब यह खण्डहर के रूप में धीरे-धीरे तब्दील हो रहा है।

चित्र संख्या – 3.2.3 मोती महल

3.2.4 नटबली का मन्दिर

उत्तर प्रदेश में बुन्देलखण्ड के बाँदा जिला मुख्यालय से सटे भूरागढ़ दुर्ग में एक ऐसा मन्दिर है, जहाँ प्रेमी जोड़ों की भीड़ रहती है.

मकरसंक्रान्ति के अवसर पर हर साल यहाँ हजारों प्रेमी जोड़े आते हैं और खिचड़ी चढ़ाते हैं. मान्यता है कि प्रेमी जोड़ों की मन्नत कुछ ही समय में पूरी भी हो जाती है|

बाँदा जिला मुख्यालय से सटे भूरागढ़ किले में बना नटबली का मन्दिर एक प्रेम कहानी का प्रतीक है| शहर के जाने-माने पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता राजकुमार पाठक बताते हैं, "1830 में भूरागढ़ किले में महोबा जिले के सुगिरा गाँव के निवासी नोने अर्जुन सिंह किलादार थे. भूरागढ़ से कुछ दूरी पर केन नदी के उस पार सरबई गाँव में बसे नट यहाँ मकरसंक्रान्ति के त्योहार में अपना करतब दिखा रहे थे| जैसे ही बली नामक नट युवक बांस के लट्ठों में बंधी पतली रस्सी पर चलकर नीचे उतरा, किलेदार अर्जुन सिंह की बेटी उससे प्रभावित होकर लिपट गई और शादी की जिद करने लगी|"

चित्र संख्या – 3.2.4 नटबली का मन्दिर

पाठक के अनुसार, "बेटी की जिद देख अर्जुन ने शर्त रखी कि यदि नट युवक रस्सी पर चलकर केन नदी पार कर किले तक आ जाए तो वह अपनी बेटी की शादी नट युवक से कर देगा| बली नामक नट युवक ने वैसा ही किया| पूरी नदी पार कर जब वह किले को छूने ही वाला था कि अर्जुन सिंह ने रांपी (धारदार हथियार) से किले की चोटी में बंधी रस्सी काट दी, जिससे पत्थरों में गिरने से नट युवक की मौत हो गई|"

वह बताते हैं, "किलेदार की बेटी अपने पिता की यह हरकत देख हतप्रभ रह गई और उसने भी किले से कूदकर जान दे दी| दोनों की समाधि में मन्दिर अगल-बगल बने हैं और तभी से हर साल नटबली के मन्दिर पर मकरसंक्रान्ति को मेला लगता चला आया है| यहाँ प्रेमी जोड़े आते हैं और खिचड़ी का प्रसाद चढ़ाकर अपने प्यार की सलामती की दुआ मांगते हैं|"

3.2.5 क्रान्तिकारियों की कब्रें

किले के अन्दर और बाहर कई क्रान्तिकारियों की कब्रें पायी जाती हैं।

चित्र संख्या – 3.2.5 क्रान्तिकारियों की कब्रें

3.2.6 शहीद स्मारक

चित्र संख्या – 3.2.6 शहीद स्मारक

अध्याय चतुर्थ
शोध अभिकल्प

4.1 शोध विधि

किसी भी अनुसन्धान की मुख्यतया तीन श्रेणियाँ होती हैं|

- ❖ ऐतिहासिक विधि
- ❖ वर्णनात्मक विधि
- ❖ प्रयोगात्मक विधि

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक अनुसन्धान के अन्तर्गत सर्वेक्षण अनुसन्धान पर आधारित है| वर्णनात्मक अनुसन्धान का एक सर्वाधिक प्रचलित प्रकार सर्वेक्षण अनुसन्धान है| सर्वेक्षण किसी क्षेत्र, समूह या संस्था की वर्तमान स्थिति को जानने, विश्लेषित करने, व्याख्यित करने तथा प्रतिवेदित करने का एक सुनियोजित प्रयास है| जिसमें प्राय: प्रश्नावली, साक्षात्कार या परीक्षणों के माध्यम से काफी अधिक व्यक्तियों से प्रदत्त संकलित किए जाते हैं| इसमें व्यक्तिगत इकाइयों की विशेषताओं को वैयक्तिक रूप से न देखकर समूह की विशेषताएं सामूहिक रूप में देखी जाती हैं एवं प्रदत्तों को समूह एवं उपसमूहों की विशेषताओं के रूप में संक्षिप्तीकरण कर प्रस्तुत किया जाता है| इस दृष्टि से सर्वेक्षण अनुसंधानों को अनुप्रस्थ प्रकार का अनुसन्धान कार्य भी कहा जा सकता है| वर्तमान समय में सर्वेक्षण को अध्ययन का एक महत्वपूर्ण प्रकार माना जाता है| इसे सूचनाओं को प्राप्त करने व सारणीबद्ध करने का लिपकीय कार्य नहीं समझना चाहिए | वरन् यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित समस्या तथा उद्देश्यों पर आधारित होता है एवं इनमें विशेषज्ञतापूर्ण तथा कल्पनाशील नियोजन, प्रतिनिधित्व प्रतिदर्श में प्रदत्तों का व्यवस्थित संकलन, प्राप्त प्रदत्तों का सजग विश्लेषण

व व्याख्या, एवं परिणामों का तार्किक कौशलयुक्त प्रतिवेदन तैयार करने जैसी विभिन्न बौद्धिक क्रियाएं सम्मिलित रहती हैं|

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी शब्द Survey का हिंदी पर्याय है| अंग्रेजी शब्द Survey से तात्पर्य 'To look over' या 'to oversee' से हैं| अतः सर्वेक्षण से तात्पर्य किसी परिस्थिति या घटना की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए उसके किसी क्षेत्र का समालोचनात्मक निरीक्षण करने से है| इसके अंतर्गत किसी घटना, समूह या परिस्थिति, विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित सूचनाएं, आंकिक रूप से संग्रहित की जाती हैं एवं सांख्यिकीय प्रविधियों के द्वारा विश्लेषित की जाती हैं| सर्वेक्षण के लिए सामान्य सर्वेक्षण शब्द का प्रयोग भी होता है जो किसी समय विशेष पर प्रचलित दशाओं की जानकारी प्राप्त करता है|

सर्वेक्षण के प्रकारों को प्रतिदर्श सर्वेक्षण तथा संगणना सर्वेक्षण में भी बाँटा जा सकता है| प्रतिदर्श सर्वेक्षण में लक्ष्य जनसंख्या से छाँटे गए एक छोटे से प्रदर्शित किए जाते हैं एवं उनका सामान्यीकरण के संपूर्ण लक्षणों के बारे में निष्कर्ष निकाले जाते हैं| इसके विपरीत सर्वेक्षण में संपूर्ण जनसंख्या से प्राप्त निष्कर्ष निकाले जाते हैं| अनुसन्धान कार्यों हेतु प्रतिदर्श सर्वेक्षण का प्रयोग किया जाता है एवं विधि द्वारा प्रतिदर्श का चयन करने पर जोर दिया जाता है| परिस्थितियों से जुड़े सर्वेक्षणों को शैक्षिक पर्यवेक्षण, सामाजिक परिस्थितियों से जुड़े सर्वेक्षणों को सामाजिक सर्वेक्षण, राजनीतिक मुद्दों से सम्बन्धित सर्वेक्षण को आर्थिक सर्वेक्षण कहा जाता है| जनता के लिए जनमत सर्वेक्षण करने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है|

जॉन डब्लू वेस्ट (1959) "आंकड़ों का एकत्रीकरण संपूर्ण जनसंख्या में सर्वेक्षण द्वारा होना चाहिए|"

शैक्षिक सर्वेक्षण में विद्यालय सर्वेक्षण का विशेष महत्व है जिसके सम्बन्ध में गुड बार एवं स्केट्स (1941) ने अपने विचार व्यक्त किए है- यह इसी प्रकार कहा जा सकता है कि कोई भी एकीकृत कार्य इतनी पूर्णता के साथ अनुसन्धान के आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का उसके विविध अवस्थाओं में प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है जितना कि विद्यालय सर्वेक्षण करता है|

पारसनाथ राय के अनुसार-

"वर्णनात्मक अनुसन्धान (सर्वेक्षण उपागम) क्या है? का वर्णन एवं विश्लेषण करता है| परिस्थितियों एवं अभिवृत्ति या जो पाई जा रही हैं, प्रक्रिया जो चल रही है, अनुसन्धान जो किए जा रहे हैं अथवा नई दिशाएँ जो विकसित हो रही हैं उन्हीं से इसका सम्बन्ध है|

4.2 अध्ययन समष्टि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थी समष्टि को समाहित किया गया है|

4.2.1 विद्यार्थी समष्टि

वर्तमान शोध समष्टि के अंतर्गत छात्र-छात्राएँ समाविष्ट हैं, जो उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के विद्यार्थी हैं| समष्टि के अंतर्गत समस्त जातियों, धर्मों के सभी विद्यार्थियों को समाहित किया गया|

4.3 निर्धारित लक्षित प्रतिदर्श का चयन

शोध योजना के समय लक्षित न्यादर्श का आकार तथा उसका विभाजन निश्चित किया गया था, जो निम्नवत है-

तालिका संख्या 4.3 लक्षित न्यादर्श का आकार तथा उसका विभाजन

छात्र	छात्राएँ
38	52

4.4 न्यादर्श चयन विधि

शोध के सन्दर्भ में प्रतिदर्श चयन के निमित्त असम्भाव्य प्रतिदर्श चयन प्राविधि (non-probability sampling technique) को ग्रहण किया गया| चित्रकूट मण्डल से बाँदा जनपद के विद्यार्थियों का चयन आकस्मिक प्रतिदर्श चयन विधि (Accidentel sampling technique) द्वारा किया गया|

4.5 लक्षित न्यादर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श के चयन हेतु निम्नांकित प्रक्रिया का अनुकरण किया गया-

4.5.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता

जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्तमान शोध अध्ययन हेतु, शोधकर्ता द्वारा उत्तर प्रदेश के चित्रकूट मण्डल का चयन किया गया| चित्रकूट मण्डल के मानचित्र के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि इसके अंतर्गत बाँदा, चित्रकूट, महोबा, हमीरपुर आते हैं| शोधकर्ता बाँदा जनपद में रहकर अध्ययन कार्य कर रहा है| बुन्देलखण्ड में बाँदा जनपद की गिनती पिछड़े जिलों में होती है| इन पिछड़े जिलों को विकास की मुख्यधारा में लाने हेतु अधिकाधिक शोधकार्य किये जाने की आवश्यकता है| अतः आकस्मिक प्रतिदर्श विधि को अंगीकृत कर, उत्तर प्रदेश में से, चित्रकूट मण्डल से बाँदा जनपद को चयनित किया गया है| (परिशिष्ट-1)

4.6 शोध उपकरण

किसी भी शोध समस्या की परिकल्पना के परीक्षण के लिए आवश्यक एवं तर्कसंगत आंकड़ों की जरूरत होती है इन आंकड़ों के संकलन के लिए जिन साधनों का उपयोग किया जाता है उन्हें शोध उपकरण कहा जाता है| अनुसन्धान के उपकरण ऐसे होने चाहिए जो वांछित उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक तथा सम्बन्धित आंकड़ों के लिए उपयुक्त हो| प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में शोध उपकरण के रूप में प्रश्नावली का प्रयोग किया गया क्योंकि यह विधि प्रस्तुत समस्या के अनुकूल एवं शोधकर्ता के लिए सुविधाजनक रही|

4.6.1 भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण

प्रायः प्रश्नावली प्रश्नों की वह क्रमबद्ध तालिका है, जो विषयवस्तु के सम्बन्ध में सूचनाएं प्राप्त करने में योगदान देती हैं|

गुड एवं हेड के अनुसार, " प्रश्नावली मापन की एक प्रविधि है जिसकी सहायता से प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए जाते हैं, जिन्हें न्यादर्श के सदस्यों द्वारा स्वयं उत्तर लिखना पड़ता है|"

इस प्रकार प्रश्नावली प्रश्नों की एक उद्देश्यपूर्ण सुनियोजित तालिका है, जो उत्तर प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरक का कार्य करती है तथा उससे प्राप्त उत्तरों का व्यवस्थापन एवं सांख्यिकीय विश्लेषण संभव है|

4.6.2 स्वनिर्मित प्रश्नावली की आवश्यकता

शोधकर्ता के समक्ष विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता के अध्ययन को ज्ञात करने के लिए कई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध न होने के कारण स्वनिर्मित प्रश्नावली, जो कि शोध के लिए आवश्यक है, का निर्माण किया गया| इस उपकरण का निर्माण अनुसन्धानकर्ता ने शोध समस्या के उद्देश्यों एवं समस्या के घटकों को ध्यान में रखकर किया है|

4.6.3 प्रश्नावली निर्माण के सोपान

प्रस्तुत शोध हेतु भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया| प्रश्नावली निर्माण के सोपान निम्नवत हैं-

(i) प्रथम सोपान (सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन)

अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रश्नावली निर्माण से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का व्यापक एवं गहन अध्ययन किया गया|

(ii) द्वितीय सोपान (विषय विशेषज्ञों से परामर्श)

शोधकर्ता ने प्रश्नावली निर्माण हेतु विषय से सम्बन्धित विशेषज्ञों की राय लेना उचित समझा तथा उनके परामर्श से प्रश्नावली के निम्न क्षेत्र निर्धारित किए गए

- दुर्ग से सम्बन्धित प्रश्न
- जागरूकता से सम्बन्धित प्रश्न

(iii) तृतीय सोपान (प्रश्नों का निर्माण)

अध्ययन कार्य हेतु प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित सम्भव प्रश्नों का निर्माण किया गया| इस प्रकार भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता के 17 प्रश्नों का निर्माण किया गया| समस्या के उद्देश्य एवं

न्यादर्श के स्तर के आधार पर संकलन हेतु बन्द प्रश्नावली का चयन किया गया| इनमें कथनों को विकल्पात्मक बनाया गया जिसमें 4 विकल्प दिए गए, इनमें से चार में से एक विकल्प को चुनना था|

(iv) चतुर्थ सोपान विशेषज्ञों की राय

प्रश्नावली निर्माण के पश्चात इसे पुनः विशेषज्ञों को दिया गया| उनके द्वारा निरर्थक प्रश्नों को हटाया गया, दोहराव वाले प्रश्नों को हटाया गया व कुछ नवीन प्रश्न जोड़े गए|

अतः सुझावों के पश्चात प्रश्नावली में प्रश्नों को क्रमवार जमाया गया| कुल 17 प्रश्न बने|

4.7 परीक्षण का प्रशासन

परीक्षण का प्रशासन शोधकर्ता द्वारा विद्यार्थियों पर किया गया|

सौहार्द्र सम्बन्ध स्थापन

परीक्षण प्रशासित करने हेतु विद्यार्थियों को google fom का link भेजा गया| सौहार्द्र स्थापन के पश्चात् शोधकर्ता द्वारा विद्यार्थियों से ऑनलाइन माध्यम से प्रश्नावली भरवाई गयी|

4.8 परीक्षण का फलांकन

google fom के माध्यम से ऑनलाइन विधि द्वारा समस्त पूरित प्रश्नावलियों का फलांकन किया गया|

4.8.1 जागरूकता परीक्षण का फलांकन

जागरूकता परीक्षण पर प्राप्त अंकों की गणना करने में फलांकन उत्तर कुंजी का प्रयोग किया गया| उत्तर पत्र पर जिन प्रश्नों के विद्यार्थियों द्वारा सही उत्तर दिए गए थे, उन प्रश्नों पर विद्यार्थियों को एक

अंक प्रदान किया गया तथा जिन प्रश्नों को छोड़ दिया गया था या गलत उत्तर दिए गए थे उन प्रश्नों पर विद्यार्थियों को शून्य अंक प्रदान किया गया| इस प्रकार सही उत्तरों पर जितने भी अंक प्राप्त हुए उन सब का योग ही विद्यार्थी विशेष का भूरागढ़ दुर्ग की जागरूकता सम्बन्धी कुल प्राप्तांक माना गया|

4.9 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

वर्तमान लघु शोध अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक एवं अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया-

4.9.1 वर्णात्मक सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रयुक्त परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों की प्रकृति एवं वितरण का अध्ययन करने हेतु अधोलिखित विवरणात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया-

1. मध्यमान (Mean)

$$M = \frac{X}{N}$$

जबकि, M=मध्यमान ; Σ=जोड़ ; X=प्राप्तांक ; N=प्राप्तांकों की संख्या

विभिन्न समूहों का औसत स्तर वर्णित करने हेतु जागरूकता के आधार पर विभिन्न समूहों की तुलना करने हेतु मध्यमान परिगणित किया गया|

2. मानक विचलन

प्राप्तांकों में विचलनशीलता का अध्ययन करने हेतु मानक विचलन ज्ञात किया गया|

जब आंकड़े केवल पदों के रूप में दिए हों तब

$$S.D. = \sqrt{\frac{d^{\,2}}{N} - \left(\frac{d}{N}\right)^{2}}$$

जहाँ, d =X-A ; X=पद ; A=कल्पित माध्य

मानक विचलन ज्ञात करने के एक्सेल के चरण:-

(i) स्टैण्डर्ड डेविएशन का हिसाब लगाने के लिए STDEV फंक्शन का इस्तेमाल करें:

आपके कर्सर को उस जगह पर रखें, आप जहाँ इसे देखना चाहते हैं|

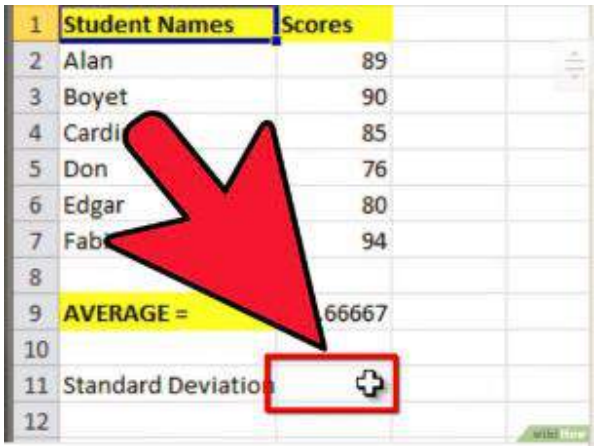

(ii) "Formulas"क्लिक करें और एक बार फिर से "InsertFunction" (fx) टैब चुनें|

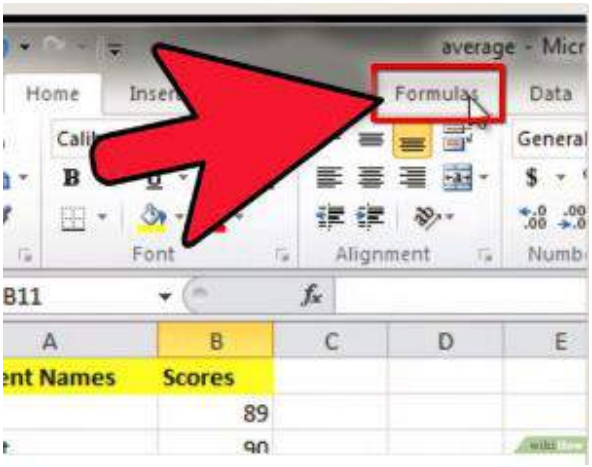

(iii) डायलाग box पर स्क्रॉल डाउन करें और STDEV फंक्शन चुनें|

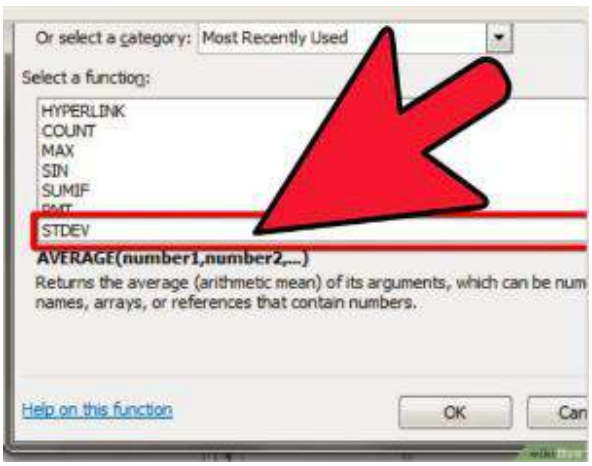

(iv) नंबर एक box में आपके नंबर की लिस्ट के लिए, सेल रेंज एंटर करे और OK क्लिक करें|

(v) अब आपके द्वारा चुनी हुई सेल में उस लिस्ट का स्टैण्डर्ड डेविएशन नज़र आएगा|

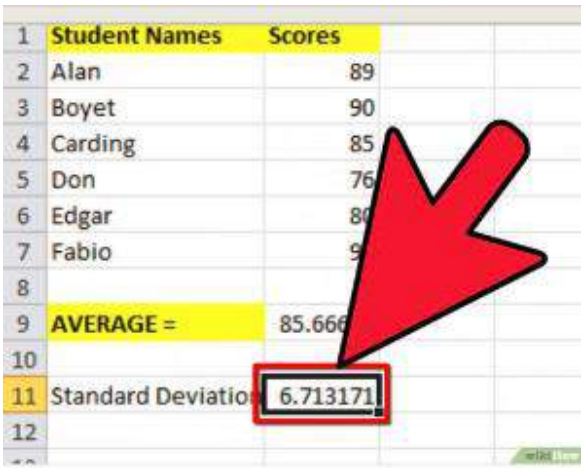

जब आपको इस फंक्शन को इस्तेमाल करने की आदत हो जायेगी, फिर आप "Insert Function" फीचर प्रोसेस का इस्तेमाल करना बंद कर सकते हैं और इसकी जगह पर सेल में सीधे इस सूत्र को टाइप कर सकते हैं:

- Standard Deviation- "=STDEV(cell range) ⟶ e. g.

  "=STDEV (D4:D13)"

3.प्रतिशत

किसी दिए गए न्यादर्श में प्रतिशत की गणना तब उपयोगी होती है, जब व्यवहार का प्रदर्शन निश्चित अभिवृद्धि की गहनशीलता या अन्य विशेषताएं प्रकट होती हैं एवं जब प्रत्यक्षतः इन विशेषताओं की गणना संभव हो जाती है| किसी व्यवहार की उपस्थिति में प्रतिशत दिया जाना प्रश्न उत्पन्न करता है कि हम इन संख्याओं में कितना विश्वास प्रकट कर सकते हैं, 100 के आधार पर जो संख्या प्राप्त होती है, उसे प्रतिशत (100 में से) कहते हैं| प्रतिशत को संक्षेप में प्र.श. से व्यक्त करते हैं उसे चिह्न % द्वारा व्यक्त किया जाता है प्रतिशत को ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है|

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{प्राप्तांक की संख्या}}{\text{पूर्णांक की संख्या}} x\ 100$$

4. दण्ड आरेख

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की विज्ञान प्रयोगशालाओं की वर्तमान स्थिति के अध्ययन हेतु दण्ड आरेख की रचना की गयी| इसके द्वारा एकल अथवा सामूहिक सांख्यिकीय आंकड़ों के मानों को आयताकार डंडों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जहाँ प्रत्येक दण्ड की लम्बाई उसके द्वारा प्रदर्शित किये जा रहे मान के अनुपात में राखी जाती है|

4.9.2 अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्रविधियाँ

परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु अग्रांकित अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्राविधि प्रयुक्त हुई-

1. क्रान्तिक अनुपात

<u>दो बड़े स्वतंत्र समूहों के मध्यमानो में अंतर की सार्थकता की जाँच:-</u> जब प्रतिदर्शों का आकर 30 या 30 से अधिक होता है, तो उनके मध्यमानो के अंतर की जाँच क्रांतिक अनुपात द्वारा की जाती है| क्रांतिक अनुपात की गणना निम्न सूत्रों द्वारा की जाती है-

$$C.R. = \frac{M_{1} \sim M_{2}}{\sqrt{\frac{^{2}_{1}}{N_1} + \frac{^{2}_{2}}{N_2}}}$$

जहाँ, M_1 = पहले समूह का समान्तर माध्य

M_2 = दूसरे समूह का समान्तर माध्य

N_1 = पहले समूह का आकार

N_2 = दूसरे समूह का आकार

$_1$ = पहले समूह का मानक विचलन

$_2$ = दूसरे समूह का मानक विचलन

अध्याय पंचम
प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य वर्णित शोध विधि द्वारा एकत्रित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विवेचना करना है| प्रस्तुत अध्याय में सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया है|

5.1 विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

प्रश्न-1. भूरागढ़ किला किस नदी के किनारे स्थित है?

(अ) बागै (ब) यमुना (स) मन्दाकनी (द) केन

सही उत्तर (द) केन

तालिका संख्या 5.1

प्रश्न-1. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	94.7
छात्राएँ	52	100
कुल विद्यार्थी	90	97.8

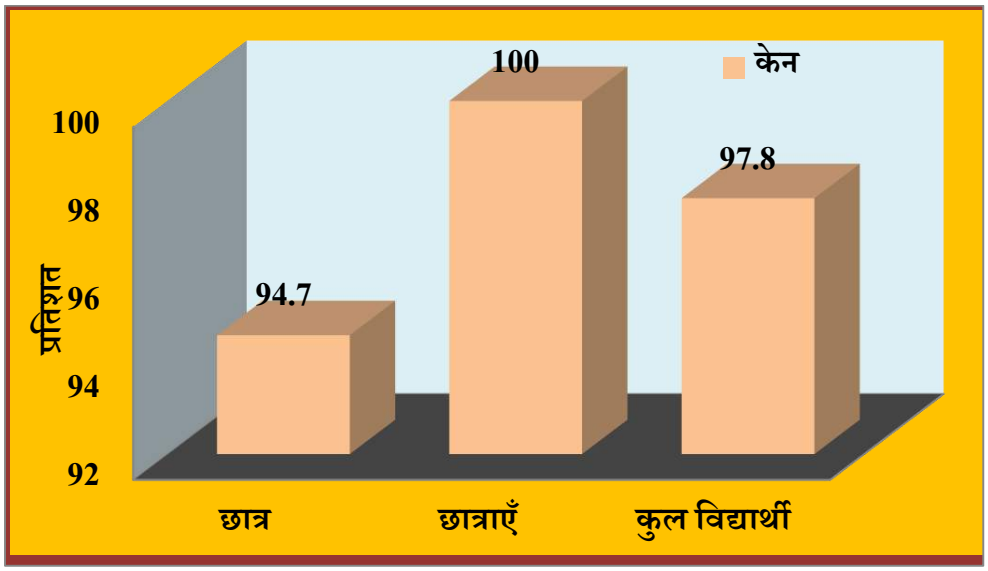

चित्र संख्या-5.1
प्रश्न-1. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.1 एवं चित्र संख्या 5.1 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "भूरागढ़ किला केन नदी के किनारे स्थित है|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 94.7 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 100 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 97.5 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "भूरागढ़ दुर्ग के केन नदी के किनारे स्थित" होने से परिचित हैं तथा छात्राएँ इस तथ्य से शत प्रतिशत परिचित हैं|

प्रश्न -2. भूरागढ़ किले में मेले का आयोजन कब होता है?

(अ) होली (ब) मकरसंक्रान्ति (स) दीपावली (द) रक्षाबन्धन

सही उत्तर (ब) मकरसंक्रान्ति

तालिका संख्या 5.2
प्रश्न-2. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	97.4
छात्राएँ	52	98.1
कुल विद्यार्थी	90	96.7

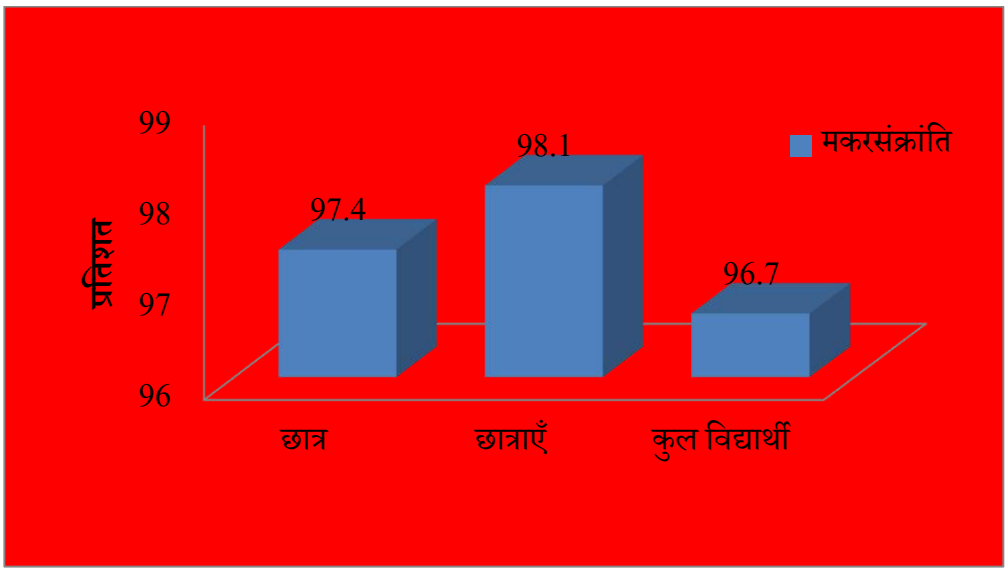

चित्र संख्या-5.2
प्रश्न-2. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण - उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2 एवं चित्र संख्या 5.2 को देखने से यह स्पष्ट होता है "भूरागढ़ किले में मेले का आयोजन मकरसंक्रान्ति में होता है|" के प्रति सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 97.4 पाया गया, वहीं छात्राओं का प्रतिशत 98.1 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 96.7 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "भूरागढ़ किले में मेले का आयोजन मकरसंक्रान्ति में होने" से परिचित हैं|

प्रश्न-3. भूरागढ़ किले का किलेदार कौन था?

(अ)अमान सिंह (ब) दलपत सिंह (स) नोने अर्जुन सिंह (द) छत्रसाल सिंह

सही उत्तर- (स) नोने अर्जुन सिंह

तालिका संख्या 5.3

प्रश्न-3. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	52.8
छात्राएँ	52	80.4
कुल विद्यार्थी	90	47.2

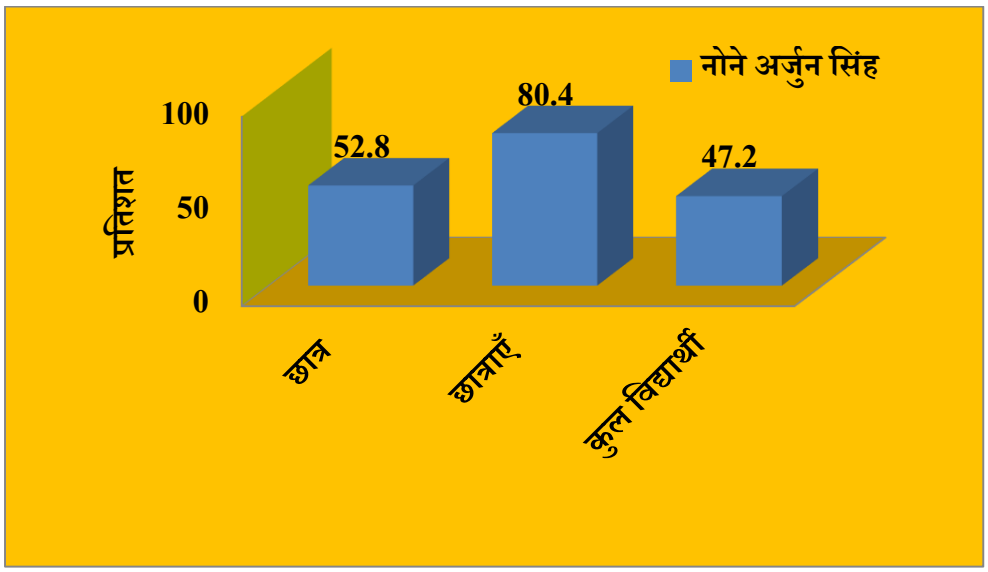

चित्र संख्या-5.3

प्रश्न-3. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3 एवं चित्र संख्या 5.3 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "भूरागढ़ किले का किलेदार नोने अर्जुन सिंह था|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 52.8 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 80.4 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 47.2 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि आधे से भी कम विद्यार्थी "भूरागढ़ किले का किलेदार नोने अर्जुन सिंह का होने" से परिचित हैं|

प्रश्न-4. सत्ती चौरा में कौन सती हुई थी?

(अ) खजांची की पत्नी (ब) नोने अर्जुन सिंह की पत्नी

(स) राजा छत्रसाल की पत्नी (द) कीरत सिंह की पत्नी

सही उत्तर (अ)) खजांची की पत्नी

तालिका संख्या 5.4

प्रश्न-4. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	40
छात्राएँ	52	68.6
कुल विद्यार्थी	90	57

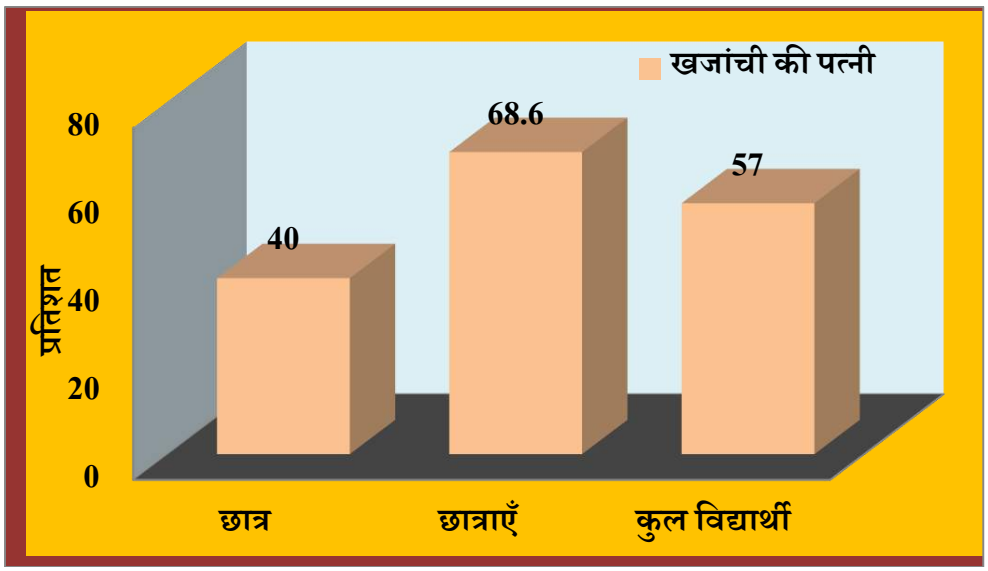

चित्र संख्या-5.4

प्रश्न-4. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.1 एवं चित्र संख्या 5.1 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "सत्ती चौरा में खजांची की पत्नी सती हुई थी|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 40 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 68.6 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 57 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "सत्ती चौरा में खजांची की पत्नी के सती" होने से परिचित हैं तथा छात्र इस तथ्य से आधे से भी कम परिचित हैं|

प्रश्न.5- नटबाबा का क्या नाम था?

(अ) बीरन (ब) अर्जुन (स) नोने (द) कीरत

सही उत्तर-(अ) बीरन

तालिका संख्या 5.5

प्रश्न-5. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	66.7
छात्राएँ	52	82
कुल विद्यार्थी	90	77.9

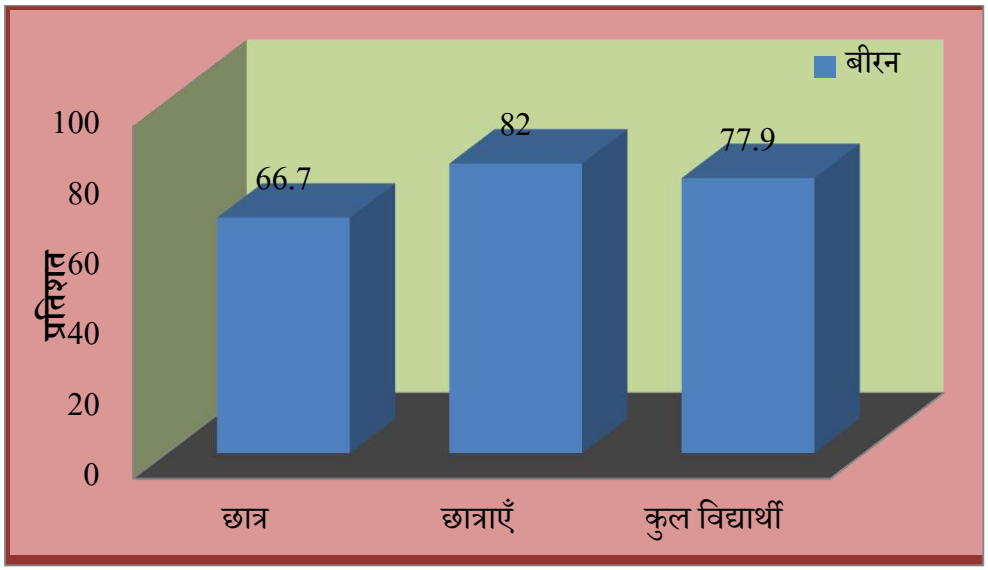

चित्र संख्या-5.5

प्रश्न-5. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "नट बाबा का नाम बीरन था|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 66.7 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 82 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 77.9 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "नट बाबा का नाम बीरन था" इस तथ्य से परिचित हैं|

प्रश्न.6- बाँदा रेलवे स्टेशन से भूरागढ़ किले की दूरी कितनी है?

(अ)1.3 k.m. (ब) 3.1 k.m. (स) 60 k.m. (द) 77 k.m.

सही उत्तर- (ब) 3.1 k.m.

तालिका संख्या 5.6
प्रश्न-6. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	89.2
छात्राएँ	52	76.9
कुल विद्यार्थी	90	82

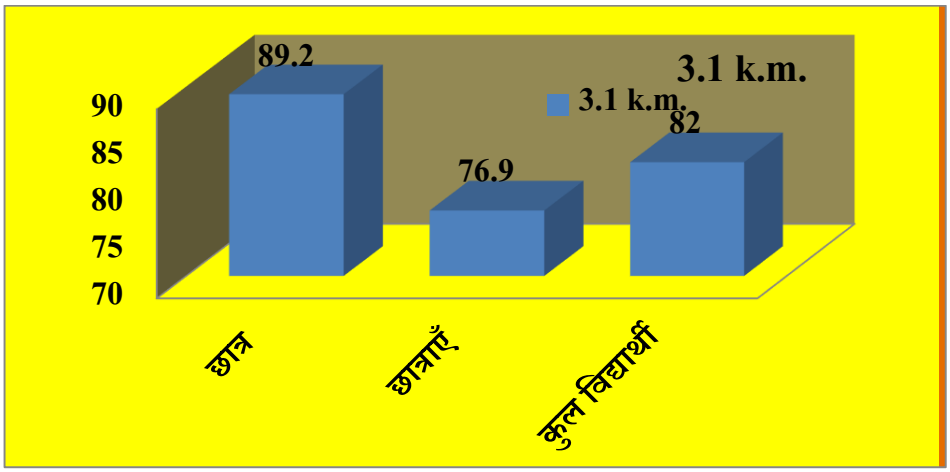

चित्र संख्या-5.6

प्रश्न-6. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.6 एवं चित्र संख्या 5.6 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "बाँदा रेलवे स्टेशन से भूरागढ़ किले की दूरी 3.1 k.m. है|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 89.2 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 76.9 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 82 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "बाँदा रेलवे स्टेशन से भूरागढ़ किले की दूरी 3.1 k.m." होने से परिचित हैं|

प्रश्न.7-नट बाबा किस उम्र में पंचतत्व में विलीन हो गये?

(अ) 28 वर्ष (ब) 21 वर्ष (स) 25 वर्ष (द) 19 वर्ष

सही उत्तर- (ब) 21 वर्ष

तालिका संख्या 5.7

प्रश्न-7. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	60.5
छात्राएँ	52	76
कुल विद्यार्थी	90	68.2

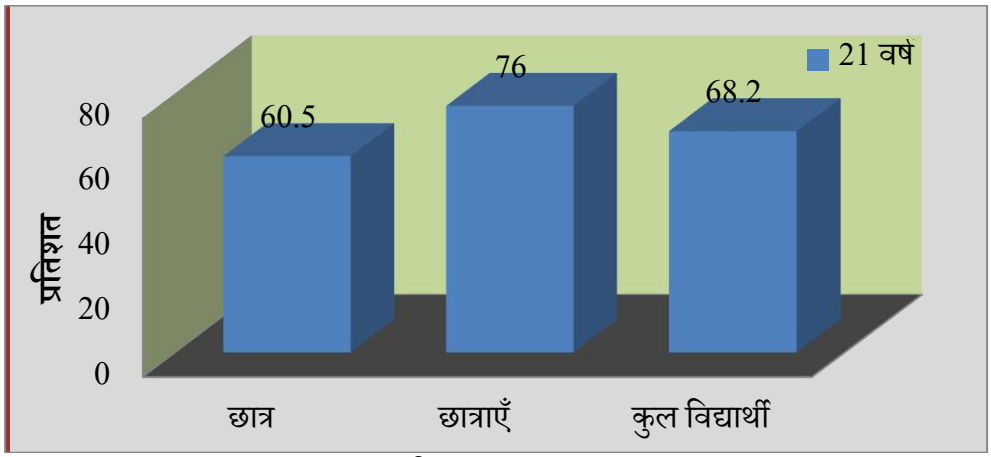

चित्र संख्या-5.7

प्रश्न-7. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.7 एवं चित्र संख्या 5.7 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "नट बाबा 21 वर्ष की उम्र में पंचतत्व में विलीन हो गये|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 60.5 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 76 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 68.2 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "नट बाबा के 21 वर्ष की उम्र में पंचतत्व में विलीन" होने से परिचित हैं|

प्रश्न-8. भूरागढ़ किला किस जिले में स्थित है?

(अ) महोबा (ब) चित्रकूट (स) पन्ना (द) बाँदा

सही उत्तर-(द) बाँदा

तालिका संख्या 5.8

प्रश्न-8. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	94.7
छात्राएँ	52	100
कुल विद्यार्थी	90	97.8

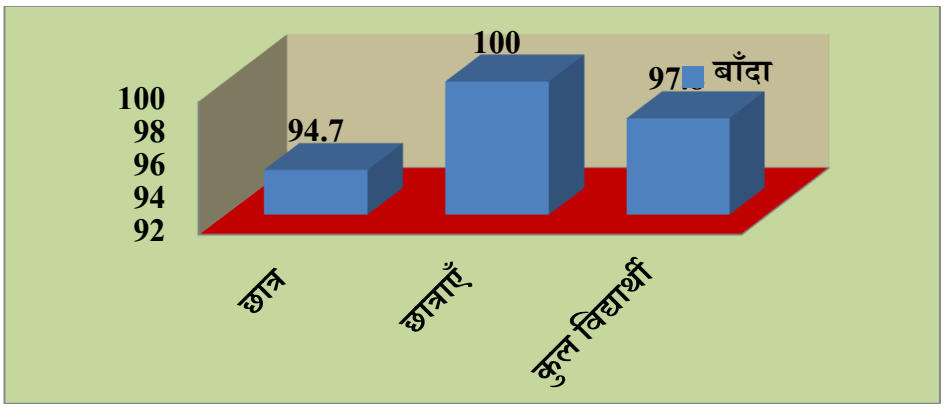

चित्र संख्या-5.8

प्रश्न-8. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.8 एवं चित्र संख्या 5.8 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "भूरागढ़ किला बाँदा जिले में स्थित है|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 94.7 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 100 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 97.8 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "भूरागढ़ किला बाँदा जिले में स्थित" होने से परिचित हैं तथा छात्राएँ इस तथ्य से शत प्रतिशत परिचित हैं|

प्रश्न-9.किलेदार की बेटी को किससे प्यार हुआ था?

(अ) नट (ब) लोहार (स) बढई (द) कहार

सही उत्तर- (अ) नट

तालिका संख्या 5.9

प्रश्न-9. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	94.7
छात्राएँ	52	94.2
कुल विद्यार्थी	90	93.3

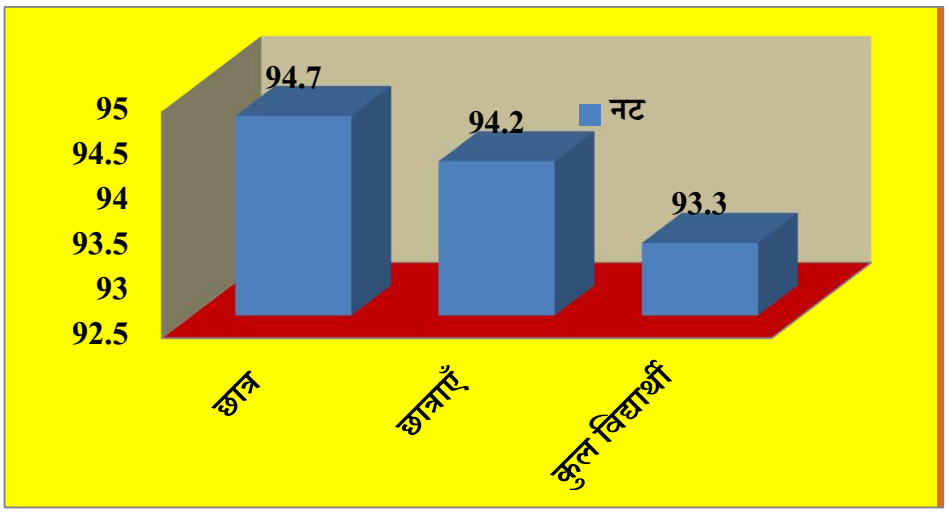

चित्र संख्या-5.9

प्रश्न-9. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.9 एवं चित्र संख्या 5.9 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "किलेदार की बेटी को नट से प्यार हुआ था|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 94.7 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 94.2 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 93.3 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "किलेदार की बेटी को नट से प्यार हुआ था|" इस तथ्य से परिचित हैं|

प्रश्न- 10. भूरागढ़ दुर्ग का प्रथम जीर्णोद्धार किसके द्वारा कराया गया था?

(अ) नोने अर्जुन सिंह (ब) बखत सिंह (स) कीरत सिंह (द) गुमान सिंह

सही उत्तर- (स) कीरत सिंह

तालिका संख्या 5.10

प्रश्न-10. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	48.6
छात्राएँ	52	56.9
कुल विद्यार्थी	90	54.5

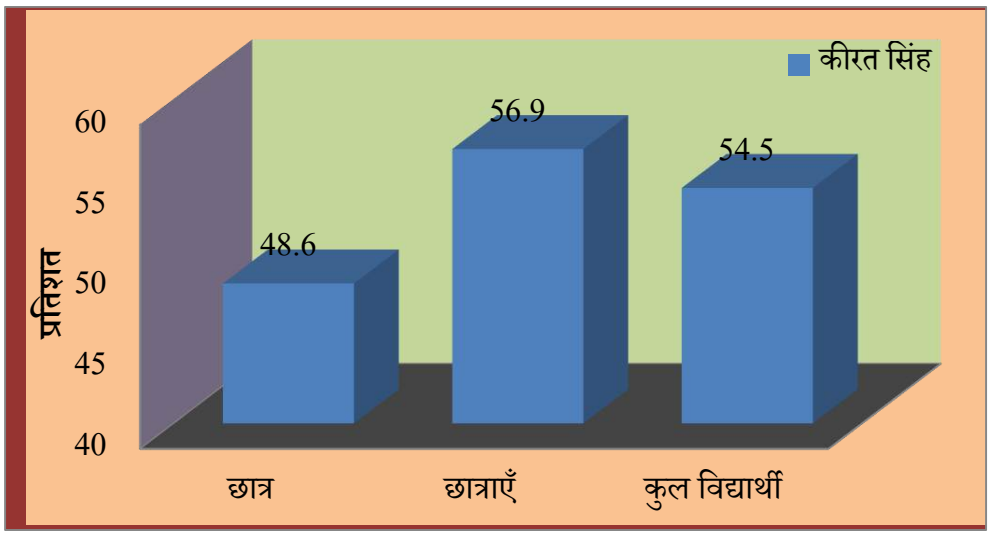

चित्र संख्या-5.10

प्रश्न-10. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.10 एवं चित्र संख्या 5.10 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "भूरागढ़ दुर्ग का प्रथम जीर्णोद्धार कीरत सिंह के द्वारा करवाया गया था|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 48.6 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 56.9 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 54.5 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "भूरागढ़ दुर्ग का प्रथम जीर्णोद्धार कीरत सिंह के द्वारा करवाया गया था|" से परिचित हैं तथा छात्र इस तथ्य से आधे से भी कम परिचित हैं|

प्रश्न.11- भूरागढ़ किला किन पत्थरों से निर्मित है?

(अ) लाल (ब) ग्रेनाइट (स) भूरे (द) संगमरमर

सही उत्तर-(स) भूरे

तालिका संख्या 5.11

प्रश्न-11. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	78.9
छात्राएँ	52	92.3
कुल विद्यार्थी	90	87.8

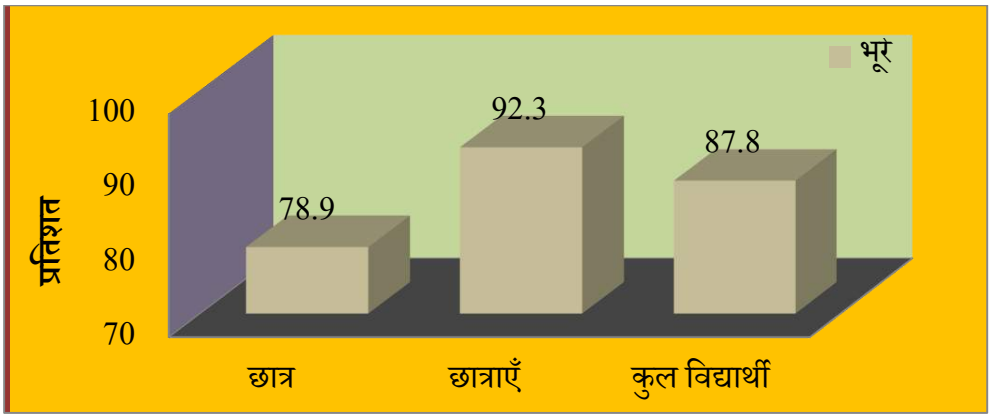

चित्र संख्या-5.11

प्रश्न-11. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.11 एवं चित्र संख्या 5.11 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "भूरागढ़ किला भूरे पत्थरों से निर्मित है|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 78.9 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 92.3 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 87.8 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "भूरागढ़ किला भूरे पत्थरों से निर्मित के केन नदी के किनारे स्थित" होने से परिचित हैं|

प्रश्न-12. भूरागढ़ नामकरण कैसे हुआ?

(अ)राजा भूरे सिंह ने बनवाया (ब) भूरे प्रस्तरों से निर्मित

(स) राजा का रंग भूरा था (द) राजा के बल भूरे थे

सही उत्तर- (ब) भूरे प्रस्तरों से निर्मित

तालिका संख्या 5.12
प्रश्न-12. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	**सही उत्तर %**
छात्र	38	81.6
छात्राएँ	52	84.6
कुल विद्यार्थी	90	83.3

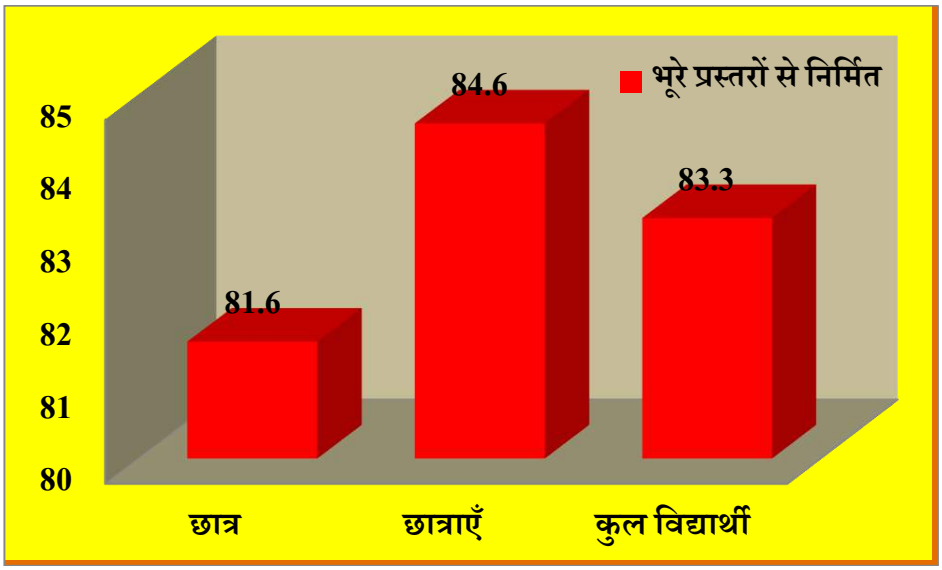

चित्र संख्या-5.12

प्रश्न-12. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.12 एवं चित्र संख्या 5.12 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "भूरागढ़ नामकरण भूरे प्रस्तरों से निर्मित होने के कारण हुआ|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 81.6 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 84.6 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 83.3 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "भूरागढ़ नामकरण भूरे प्रस्तरों से निर्मित होने के कारण" होने से परिचित हैं|

प्रश्न.13-नटबली मन्दिर के सामने कौन सा मन्दिर है?

(अ) शिव (ब) राम (स) गणेश (द) दुर्गा

सही उत्तर- (अ) शिव

तालिका संख्या 5.13

प्रश्न-13. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	78.4
छात्राएँ	52	90.0
कुल विद्यार्थी	90	87.4

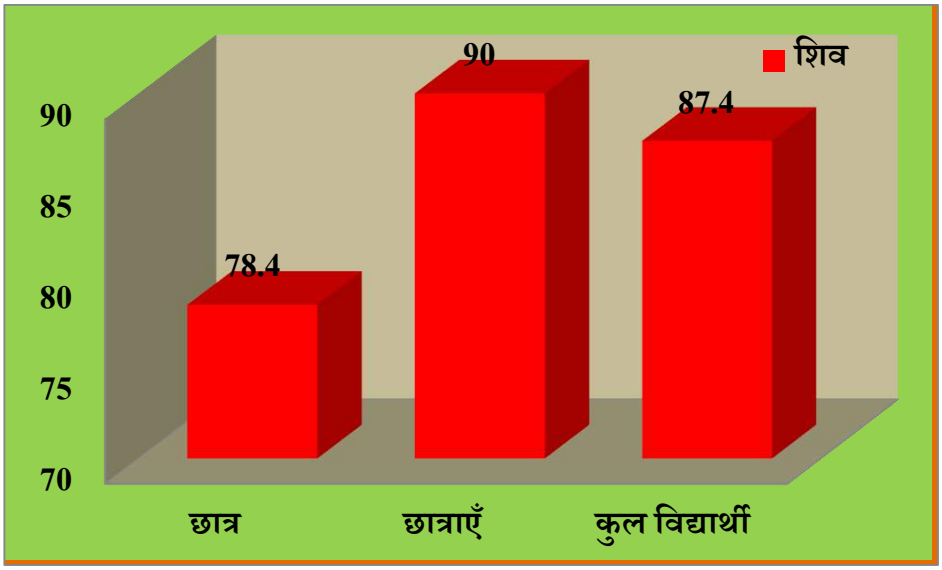

चित्र संख्या-5.13

प्रश्न-13. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.1 एवं चित्र संख्या 5.1 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "नटबली मन्दिर के सामने शिव मन्दिर है|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 78.4 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 90 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 87.4 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "नटबली मन्दिर के सामने शिव मन्दिर" होने से परिचित हैं|

प्रश्न.14- भूरागढ़ किले में किस महात्मा की मूर्ति स्थापित है?

(अ) विवेकानन्द (ब) विज्ञानानन्द (स) विरजानन्द (द) सम्पूर्णानन्द

सही उत्तर- (ब) विज्ञानानन्द

तालिका संख्या 5.14
प्रश्न-14. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	77.8
छात्राएँ	52	79.6
कुल विद्यार्थी	90	75.3

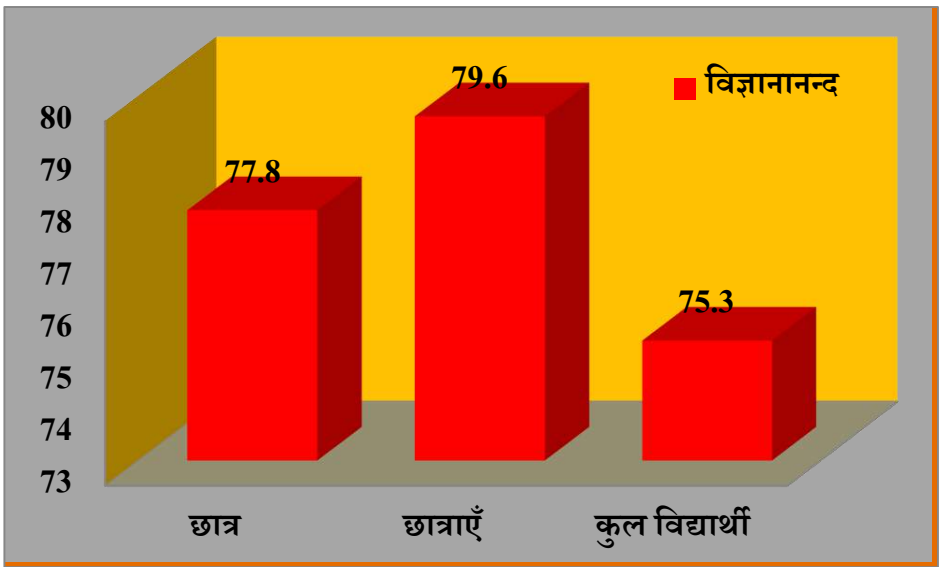

चित्र संख्या-5.14
प्रश्न-14. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.14 एवं चित्र संख्या 5.14 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "भूरागढ़ किले में विज्ञानानन्द जी की मूर्ति स्थापित है|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 77.8 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 79.6 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 75.3 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "भूरागढ़ किले में विज्ञानानन्द जी की मूर्ति स्थापित" होने से परिचित हैं|

प्रश्न.15- भूरागढ़ किले का निर्माण किस शताब्दी में हुआ?

(अ) 17 वीं (ब) 9 वीं (स) 11 वीं (द) 13 वीं

सही उत्तर- (अ) 17 वीं

तालिका संख्या 5.15
प्रश्न-15. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	83.3
छात्राएँ	52	92.0
कुल विद्यार्थी	90	89.5

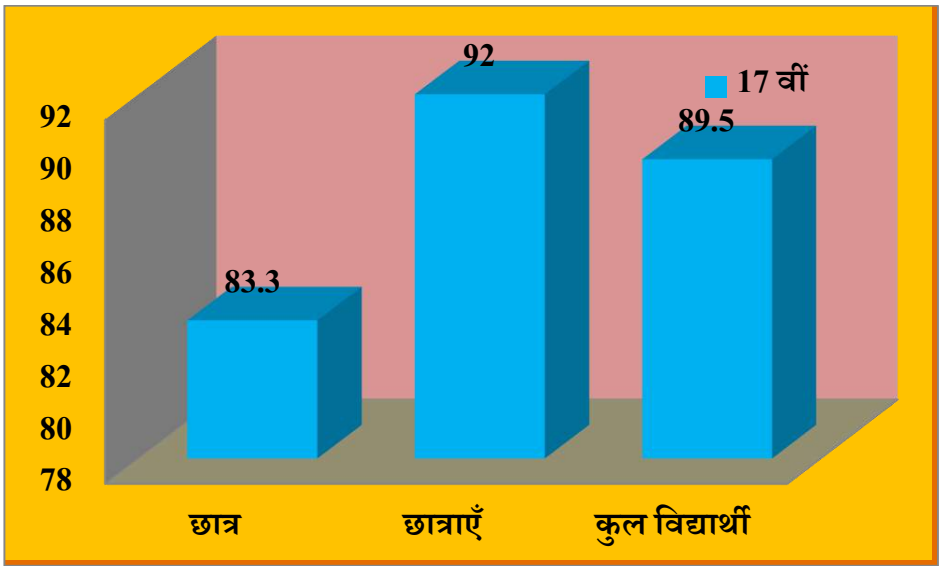

चित्र संख्या-5.15

प्रश्न-15. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.15 एवं चित्र संख्या 5.15 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "भूरागढ़ किले का निर्माण 17 वीं शताब्दी में हुआ|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 83.3 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 92 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 89.5 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "भूरागढ़ किले का निर्माण 17 वीं शताब्दी में" होने से परिचित हैं|

प्रश्न.16- वर्ष 1857 में बाँदा में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध में नेतृत्व किसने किया?

(अ)नवाब अली बहादुर द्वितीय (ब) लक्ष्मण सिंह

(स) राजराम दउआ (द) नवाब अली बहादुर प्रथम

सही उत्तर- (अ) नवाब अली बहादुर द्वितीय

तालिका संख्या 5.16

प्रश्न-16. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	76.6
छात्राएँ	52	77.6
कुल विद्यार्थी	90	73.3

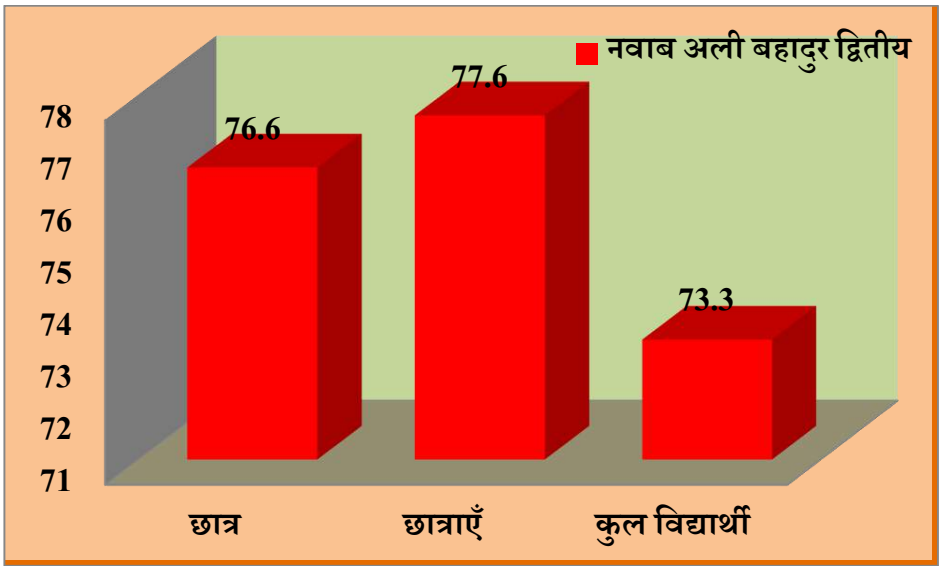

चित्र संख्या-5.16

प्रश्न-16. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.16 एवं चित्र संख्या 5.16 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "वर्ष 1857 में बाँदा में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध में नेतृत्व नवाब अली बहादुर द्वितीय ने किया|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 76.6 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 77.6 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 73.3 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "वर्ष 1857 में बाँदा में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध में नेतृत्व नवाब अली बहादुर द्वितीय ने किया|" इस तथ्य से परिचित हैं|

प्रश्न.17-महाराज छत्रसाल ने राज्य का विभाजन कर भूरागढ़ किसे दिया?

(अ) हृदयशाह (ब) जगतराय (स) रानी विजै कुँवरि (द) इनमें से कोई नहीं

सही उत्तर- (ब) जगतराय

तालिका संख्या 5.17

प्रश्न-17. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर %
छात्र	38	52.8
छात्राएँ	52	48.9
कुल विद्यार्थी	90	50.6

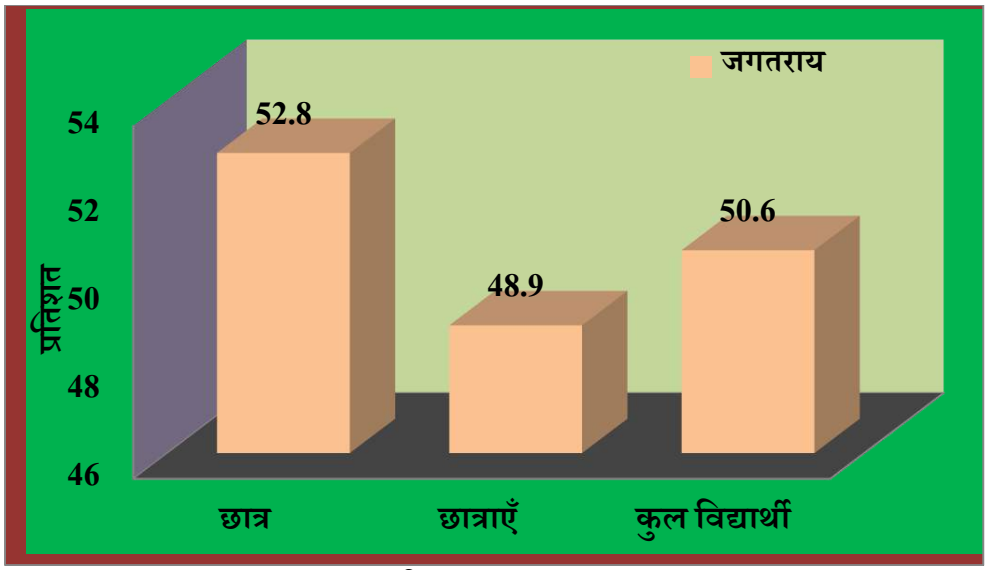

चित्र संख्या-5.17

प्रश्न-17. के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.17 एवं चित्र संख्या 5.17 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "महाराज छत्रसाल ने राज्य का विभाजन कर भूरागढ़ जगतराय को दिया|" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 52.8 पाया गया वहीँ छात्राओं का प्रतिशत 48.9 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 50.6 पाया गया|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "महाराज छत्रसाल ने राज्य का विभाजन कर भूरागढ़ जगतराय को दिया|" इस तथ्य से परिचित हैं| तथा छात्राएँ इस तथ्य से आधे से भी कम परिचित हैं|

5.2 विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.2
विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	N	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश (Df)	क्रान्तिक अनुपात (CR)	साथर्कता स्तर	तालिका मान
छात्र	38	12.105	3.477	88	2. 4688	0.05	1.984
छात्राएँ	52	13.788	2.761				

5.2 का विश्लेषण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है, कि छात्रों का मध्यमान 12.105 एवं छात्राओं का मध्यमान 13.788 है तथा परिगणित क्रान्तिक अनुपात (CR) मान 2.4688 है, जो कि स्वतंत्रांश 88 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात (CR) के सारणी मान 1.984 से अधिक है|

अतः शून्य परिकल्पना "छात्र-छात्राओं की भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है", 0.5 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है|

परिकल्पना परीक्षण में छात्र एवं छात्राओं की भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता में अन्तर पाया गया है|

विवेचना- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है, कि छात्राएँ छात्रों की अपेक्षा भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति अधिक जागरूक हैं|

अध्याय षष्ठ
निष्कर्ष एवं सुझाव

अनुसन्धान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को सापेक्षित कर, निष्कर्षों का सामान्यीकरण करके वर्ग विशेष के लिए अनुमोदित करना, अनुसन्धान का अन्तिम चरण माना गया है| अनुसन्धान क्षेत्र में निष्कर्षों व सामान्य प्रदत्त को एक सार्वभौमिक आकार प्रदान करता है इसके द्वारा अनुसन्धानकर्ता को निष्कर्षों के महत्व को मूल्यांकित कर सकने की योग्यता प्राप्त होती है|

किसी भी शोध कार्य द्वारा प्राप्त परिणामों के लिए यह पूर्णत: विश्वसनीयता के साथ नहीं कहा जा सकता है कि यह शोध पूर्णत: शोध क्षेत्र से सम्बन्धित सम्पूर्ण पहलुओं को पूर्ण करता है, क्योंकि प्राय: कुछ पहलू अछूते रह जाते हैं| इसलिए परिणाम के साथ-साथ यह भी नितान्त आवश्यक है कि शोध अध्ययन के सन्दर्भ में उन सीमाओं का उल्लेख किया जाये, जिनसे शोध अध्ययन सीमित हो जाता है| अतः प्रस्तुत अध्याय को उपर्युक्त वर्णित बिन्दुओं के आधार पर निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है-

- ❖शोध अध्यन के निष्कर्ष
- ❖शोध अध्यन की शैक्षिक उपादेयता
- ❖अध्ययन के सुझाव
- ❖ भावी शोध अध्यन हेतु सुझाव

6.1 शोध अध्ययन के निष्कर्ष

सम्पूर्ण शोध कार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है| प्रस्तुत शोध कार्य में 6 उद्देश्य लिए गए थे| जिनका विवरण प्रथम अध्याय में प्रस्तुत किया जा चुका है| लघु शोध प्रबन्ध के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये गए-

उद्देश्य 1: विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग प्रति जागरूकता अध्ययन हेतु भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना|

शोधकर्ता द्वारा भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता के 17 प्रश्नों को सम्मिलित किया गया तथा मिश्रित प्रश्नावली का चयन किया गया| जिसमें कथनों को बहुविकल्पात्मक प्रकार के प्रश्न सम्मिलित हैं जो कि विद्यार्थियों की जागरूकता के अध्ययन हेतु उपयुक्त है|

उद्देश्य 2: भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना|

भूरागढ़ दुर्ग के विद्यार्थियों में दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत की जागरूकता के प्रति अन्तर पाया गया|

उद्देश्य 3: भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना|

छात्र एवं छात्राओं की भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता में अन्तर पाया गया एवं छात्राएँ छात्रों की अपेक्षा अधिक जागरुक पायी गयीं|

उद्देश्य 4: भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत में पर्यटन की संभाव्यता का अध्ययन करना|

प्रस्तुत उद्देश्य के सन्दर्भ में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का सर्वेक्षण किया गया और यह पाया गया कि भूरागढ़ दुर्ग क्षेत्र में धर्म, संस्कृति तथा विशिष्ट रीति-रिवाजों से युक्त अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं जिनके गौरवमयी अतीत से प्रभावित हुए बिना व्यक्ति नहीं रह सकता| पर्यटन की दृष्टि से यह क्षेत्र रमणीय क्षेत्र है| इस क्षेत्र में पर्यटन की पर्याप्त संभाव्यता है| अतः इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुविधाएं, यातायात, आवास, सुरक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए|

उद्देश्य 5: भूरागढ़ दुर्ग में पर्यटन विकास की समस्याओं का अध्ययन करना|

प्रस्तुत उद्देश्यों के सन्दर्भ में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत की समस्याओं का सर्वेक्षण किया गया और यह पाया कि भूरागढ़ के इतिहास तथा यहाँ की वास्तुशिल्प एवं प्रकृति की सुन्दरता के बावजूद, साधनों के अभाव के कारण यहाँ आये हुए यात्री किन्हीं अन्य यात्रियों को यहाँ आने की सलाह नहीं देते| जिसके कारण यहाँ यात्रियों का आवागमन अभी अन्य पर्यटन स्थलों की तरह नहीं हो पाया अतः भूरागढ़ दुर्ग की समस्याएं इस प्रकार हैं –

- आवागमन के साधनों का अभाव|
- पर्यटकों की सुरक्षा व्यवस्था का अभाव|
- पर्यटकों के मनोरंजन के साधनों का अभाव|
- पर्यटकों की आवासीय व्यवस्था का अभाव|

- पर्यटकों के लिए भूरागढ़ से सम्बन्धित प्रचार सामग्री का अभाव|
- पर्यटकों के लिए उचित मार्गदर्शकों (गाइडों) का अभाव|
- कला संस्कृति से जुड़ी हुई लोक कलाओं का अभाव|
- वहाँ के जीर्ण-शीर्ण जलाशयों का पुनर्निर्माण न होना|

उद्देश्य 6: भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना|

प्रस्तुत उद्देश्य के सन्दर्भ में पाया गया कि भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थी पूर्णतः जागरूकता नहीं हैं| अतः जागरूकता के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं-

- विद्यालयों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाएं|
- लोगों की जागरूकता के लिए संगोष्ठियाँ एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए|
- ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाएं|
- भूरागढ़ क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थलों को विश्व ऐतिहासिक धरोहर घोषित किया जाए|
- भूरागढ़ तक आवागमन के साधनों का विकास तीव्र गति से किया जाए|
- भूरागढ़ में विकास प्राधिकरण की स्थापना तथा इसे मॉडल टाउन के रूप में विकसित किया जाए|

6.2 शोध अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत, विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों एवं समाज में लोगों के दृष्टिकोणों को विकसित करने में सहायक होंगे| ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान में विभन्न नये आयाम प्रस्तावित किये जा सकते है|

प्रस्तुत अध्ययन में दर्शनीय भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत, प्राकृतिक स्थलों, जलाशयों जैसे- मोतीमहल, बावड़ी, शहीद स्मारक, शहीदों की कब्रें, इत्यादि पर विस्तृत चर्चा की गई है| साथ ही पर्यटन जैसे विश्वव्यापी महत्व वाले विषय पर प्रकाश डाला गया है जिससे पर्यटन के विकास पर बल दिया जा सके साथ ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित त्यौहारों, महोत्सवों एवं कलात्मक वस्तुओं आदि के बारे में विश्लेषणात्मक ढंग से चर्चा की गयी है| प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा|

6.3 अध्ययन के सुझाव

- ❖ ऐतिहासिक विरासत के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए, संगोष्ठियाँ, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जाना चाहिए|
- ❖ ऐतिहासिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए लिए शासन-प्रशासन स्तर पर कार्य-योजना तैयार की जानी चाहिए

- ❖ भूरागढ़ क्षेत्र/प्रांत की ऐतिहासिक विरासत/शौर्य/वीरता/ पराक्रम/संस्कृति/पुरुषार्थ का इतिहास उस क्षेत्र विशेष में विस्तृत रूप से अतरिक्त सहायक पाठ्यपुस्तक के रूप में शामिल किए जाने की आवश्यकता है|
- ❖ शैक्षिक भ्रमण हेतु ऐतिहासिक स्थल तक पहुँचने के मार्ग संकेत नगर के मुख्य चौराहों में लगाया जाये|
- ❖ ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण एवं आस-पास की स्वच्छता के लिए लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिए |
- ❖ यहाँ पर जुड़ी हुई लोक संगीत परम्पराओं को विकसित करके समय-समय पर उसका प्रस्तुतीकरण हो|
- ❖ भूरागढ़ के इतिहास को पर्यटन की दृष्टि से लिखकर उसका प्रचार-प्रसार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किया जाए|
- ❖ भूरागढ़ महोत्सव का आयोजन प्रति वर्ष किया जाए और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जाए|
- ❖ परम्परागत कुटीर उद्योगों को विकसित किया जाए|

6.4 भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव

शोध अध्ययन के क्षेत्र में सत्य की खोज निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है| कोई भी शोध कार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रृंखला है जिसमें एक कड़ी के सम्पन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है| कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता

है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किये जा सकते हैं| ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके| शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययन किया जाना आवश्यक होता है| शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता होती है जो कि केवल एक शोधार्थी के लिए संभव नहीं होता जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता| एक शोध समस्या पर किए गया शोध कार्य दूसरे शोधार्थी द्वारा किये गये शोध अध्ययन के लिए मार्गदर्शन और सुझाव का कार्य करता है| इस शोध कार्य के आधार पर भावी अध्ययन के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं –

- ❖ वर्तमान शोध अध्ययन मात्र उत्तर प्रदेश के केवल बाँदा जनपद तक सीमित है| भावी अनुसन्धान में अन्य जनपदों को सम्मलित किया जा सकता है|
- ❖ प्रस्तुत अध्ययन बाँदा जिले के भूरागढ़ की ऐतिहासिक विरासत तक सीमित रहा| भावी अध्ययन बाँदा जिले के अन्य ऐतिहासिक विरासतों पर किया जा सकता है|

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

https://www.amarujala.com/uttar pradesh banda bhooraagadh-duckee-bhoomi.mein-goshaala-kee-maangee-anumati-banda-news.kap6067691191

https://www.jagran.com/uttar-pradesh/banda-11008758.html

http://www.kalinjar.in/blog/article history-of-bhuragarfort

● श्रीवास्तव, रमेश चन्द्र याँदा वैभव, पेज न.135) बाँदा : महेश्वरी प्रेस

https://khabariahatiya.org/bhuragarh-fort – of– banda

● चौरसिया, पूजा (2019)| माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति की प्रति जागरूकता का अध्ययन। लघु शोध– प्रबंधन, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी

• सिंह, रमिता (2001) ने 'कालिंजर के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व तथा पर्यटन विकास की सम्भावनाएँ " पीएचडी, " बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी < htp://hdl.handle.net/10603/13854>

• गुप्ता, एस. पी. (2015) अनुसंधान संदर्शिका ; शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

•सजीवन, राम (2006) बुन्देलखंड के दुर्ग एक ऐतिहासिक, अध्ययन ; पीएचड़ी बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय झाँसी

http://hdl.handle.net/10603/15564

• मिश्र, प्रत्युष (2002) बुन्देलखण्ड में पर्यटन विकास नियोजन कालिंजर के विशेष सन्दर्भ में, पीएचडी, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी <http://hdl• hondle • net/10603/24980>

परिशिष्ट

परिशिष्ट—1

बाँदा जनपद का मानचित्र

परिशिष्ट—2

भूरा गढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली (प्रथम प्रारूप) अतिरिक्त प्रश्न

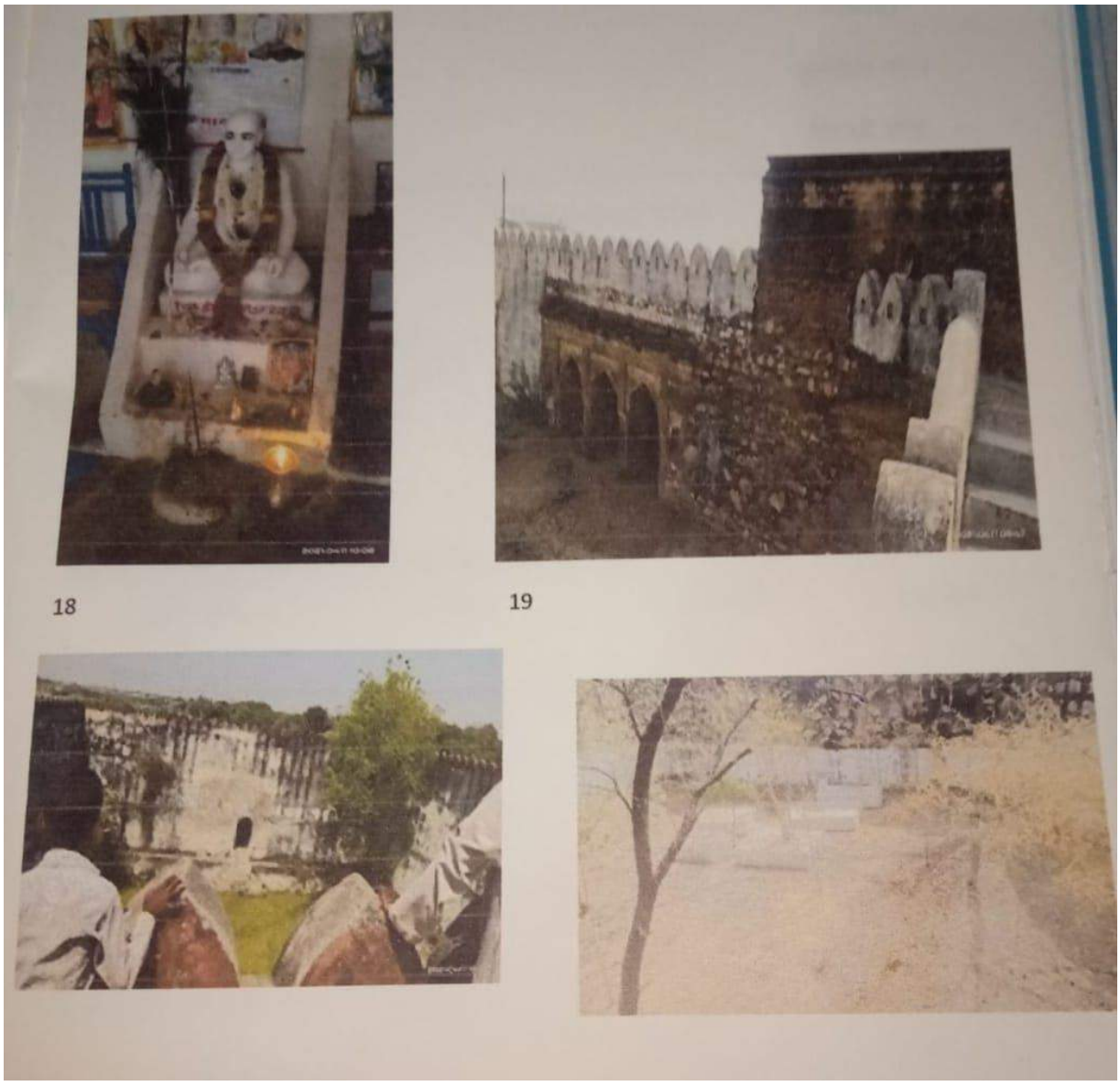

18

19

परिशिष्ट—3

भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली (अंतिम प्रारूप)

प्रश्न-1. भूरागढ़ किला किस नदी के किनारे स्थित है?

(1) बागै (ब) यमुना (स) मन्दाकनी (द) केन

प्रश्न -2. भूरागढ़ किले में मेले का आयोजन कब होता है?

(1) होली (ब) मकरसंक्रान्ति (स) दीपावली (द) रक्षाबन्धन

प्रश्न-3. भूरागढ़ किले का किलेदार कौन था?

(1) अमान सिंह (ब) दलपत सिंह (स) नोने अर्जुन सिंह (द) छत्रसाल सिंह

प्रश्न-4. सत्ती चौरा में कौन सती हुई थी?

(अ) खजांची की पत्नी (ब) नोने अर्जुन सिंह की पत्नी

(स) राजा छत्रसाल की पत्नी (द) कीरत सिंह की पत्नी

प्रश्न.5- नटबाबा का क्या नाम था?

(1) बीरन (ब) अर्जुन (स) नोने (द) कीरत

प्रश्न.6- बाँदा रेलवे स्टेशन से भूरागढ़ किले की दूरी कितनी है?(अ)1.3 k.m. (ब) 3.1 k.m. (स) 60 k.m. (द) 77 k.m.

प्रश्न.7-नट बाबा किस उम्र में पंचतत्व में विलीन हो गये?

(अ) 28 वर्ष (ब) 21 वर्ष (स) 25 वर्ष (द) 19 वर्ष

प्रश्न-8. भूरागढ़ किला किस जिले में स्थित है?

(1) महोबा (ब) चित्रकूट (स) पन्ना (द) बाँदा

प्रश्न-9.किलेदार की बेटी को किससे प्यार हुआ था?

(1) नट (ब) लोहार (स) बढई (द) कहार

प्रश्न- 10. भूरागढ़ दुर्ग का प्रथम जीर्णोद्धार किसके द्वारा कराया गया था?

(अ)नोने अर्जुन सिंह (ब) बखत सिंह (स) कीरत सिंह (द) गुमान सिंह

प्रश्न.11- भूरागढ़ किला किन पत्थरों से निर्मित है?

(अ) लाल (ब) ग्रेनाइट (स) भूरे (द) संगमरमर

प्रश्न-12. भूरागढ़ नामकरण कैसे हुआ?

(अ)राजा भूरे सिंह ने बनवाया (ब) भूरे प्रस्तरों से निर्मित

(स) राजा का रंग भूरा था (द) राजा के बल भूरे थे

प्रश्न.13-नटबली मन्दिर के सामने कौन सा मन्दिर है?

(अ) शिव (ब) राम (स) गणेश (द) दुर्गा

प्रश्न.14- भूरागढ़ किले में किस महात्मा की मूर्ति स्थापित है?

(1) विवेकानन्द (ब) विज्ञानानन्द (स) विरजानन्द (द) सम्पूर्णानन्द

प्रश्न.15- भूरागढ़ किले का निर्माण किस शताब्दी में हुआ?

(अ) 17 वीं **(ब)** 9 वीं **(स)** 11 वीं **(द) 13 वीं**

प्रश्न.16- वर्ष 1857 में बाँदा में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध में नेतृत्व किसने किया?

(अ)नवाब अली बहादुर द्वितीय (स) लक्ष्मण सिंह

(स) राजराम दउआ (द) नवाब अली बहादुर प्रथम

प्रश्न.17-महाराज छत्रसाल ने राज्य का विभाजन कर भूरागढ़ किसे दिया?

(अ) हृदयशाह (ब) जगतराय (स) रानी विजै कुँवरि (द) इनमें से कोई नही

भूरागढ़ दुर्ग के प्रति जागरुकत प्रश्नावली सम्बन्धी उत्तर कुंजी

प्रश्न-1. भूरागढ़ किला किस नदी के किनारे स्थित है? **केन**

प्रश्न -2. भूरागढ़ किले में मेले का आयोजन कब होता है? **मकरसंक्रान्ति**

प्रश्न-3. भूरागढ़ किले का किलेदार कौन था? **नोने अर्जुन सिंह**

प्रश्न-4. सत्ती चौरा में कौन सती हुई थी? **खजांची की पत्नी**

प्रश्न.5- नटबाबा का क्या नाम था? **बीरन**

प्रश्न.6- बाँदा रेलवे स्टेशन से भूरागढ़ किले की दूरी कितनी है? **3.1 k.m.**

प्रश्न.7-नट बाबा किस उम्र में पंचतत्व में विलीन हो गये? **21 वर्ष**

प्रश्न-8. भूरागढ़ किला किस जिले में स्थित है? **बाँदा**

प्रश्न-9.किलेदार की बेटी को किससे प्यार हुआ था? **नट**

प्रश्न- 10. भूरागढ़ दुर्ग का प्रथम जीर्णोद्धार किसके द्वारा कराया गया था? **(कीरत सिंह**

प्रश्न.11- भूरागढ़ किला किन पत्थरों से निर्मित है? **भूरे**

प्रश्न-12. भूरागढ़ नामकरण कैसे हुआ? **भूरे प्रस्तरों से निर्मित**

प्रश्न.13-नटबली मन्दिर के सामने कौन सा मन्दिर है? **शिव**

प्रश्न.14- भूरागढ़ किले में किस महात्मा की मूर्ति स्थापित है? **विज्ञानानन्द**

प्रश्न.15- भूरागढ़ किले का निर्माण किस शताब्दी में हुआ? **17 वीं**

प्रश्न.16- वर्ष 1857 में बाँदा में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध में नेतृत्व किसने किया? (नवाब अली बहादुर द्वितीय)

प्रश्न.17-महाराज छत्रसाल ने राज्य का विभाजन कर भूरागढ़ किसे दिया? जगतराय

विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन

ISBN 978-93-5636-416-5